

सर्व प्रथम अद्वितीय भाषा

ॐ

१०८ मुनि क्षीरसागर जी महाराज प्रणीत

# आगमवाणी

## प्रथम भाग



प्रकाशक

बाबूलाल लम्बरदार

मा. फ. भोगचन्द्र ब्रजलाल चौक बाजार, भोपाल.

# विषय-सूची

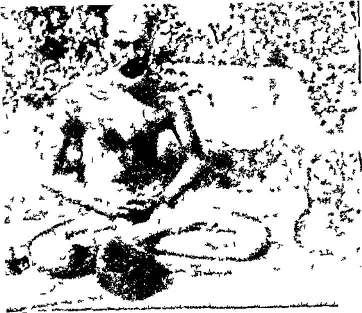
नाम पाठ



## शुद्धि पत्र

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्धि | शुद्धि |
|---|---|---|---|
| ६१ | ८ | नाना जीवों की | एक और नाना जीवों की |
| ६५ | १० | प्रमत्त संयत | प्रमत्त और अप्रमत्त |





अनेक ग्रन्थों के रचयिता और अनेक अतिशय
स्वपरबोधित, परमअध्यात्मयोगी, विद्यमानभोगपरिहारी,
दम्पतिमहाव्रतधारी, एकाविहारी, निरम्बरलिङ्गधारी,
महासाहित्यिक, महावाग्मी, महाकवि ] के
धारक परमपूज्य श्री १०८ महामुनि
क्षीरसागरजी महाराज।

---

# श्री १०८ मुनि क्षीरसागर जी महाराज का जीवन-वृत

आपका जन्म श्रावण कृष्णा ३ सं १९६० में रिठौरा ग्राम जिला मुरैना (ग्वालियर) में बरैया वंश में सौ० द्रौपदी बहिन के पश्चात हुआ था। आपका नाम बोहरे मोतीलालजी था। पिता का नाम बोहरे पन्नालालजी तथा माता का नाम कौशल्या बाई था। आपकी शिक्षा मुरैना जैन विद्यालय में केवल चौथी तक हुई और ११ वर्ष की अवस्था में आपका विवाह साह नन्दरामजी ना [ग्वालियर] की सुपुत्री मथुराने के साथ हो गया। लगभग ४० वर्ष की या तक आप पूर्ण धार्मिक मर्यादा सहित गृहस्थ जीवन करते रहे। आपका व्यवसाय कपड़े की दुकान तथा साहूकारी था। चिरन्जीलालजी, मुनेरीलालजी मलालजी, शंकरलालजी तथा अमृतलालजी आपके पांच सुपुत्र हैं। जो इस य ग्वालियर में कपड़े का व्यवसाय कर रहे हैं। विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करते य ही आपके हृदय में विशेष धार्मिक अभिरुचि उत्पन्न हुई और स्वाध्याय, न, पूजन आदि आपके दैनिक नियम बन गये। बाल्य काल से ही आपकी प्रवृति व्यसनों से सर्वथा विमुख रही। प्रत्येक शास्त्र की समाप्ती पर आप कुछ न कुछ म अवश्य लेते थे। एक बार आपने एक महान नियम लिया कि पुत्र वधू के आते गृह त्याग दूंगा। गृहस्थ जीवन व्यतीत करते हुए भी आपका हृदय सदैव संसार विरक्त रहा। सांसारिक प्रलोभन आपकी पवित्र आत्मा को जरा भी विचलित न सके। दो पुत्रों की शादी होने के पश्चात उनकी छोटी अवस्था होने के कारण ३ वर्ष तक ७ वीं प्रतिमा धारण कर घर पर ही रहे। अन्त में संसार की नित्यता को देख कर अपने आत्म कल्याण की दृष्टि से आपने अपनी धर्म पत्नी हित क्षुल्लक अवस्था धारण की। इससे पूर्व आपने धर्म पत्नी सहित १ वर्ष तक सभी तीर्थों की यात्रा की। आपकी धर्म पत्नी पूज्य श्री क्षुल्लिका के नाम से यात हैं। ३ वर्ष तक क्षुल्लक अवस्था में रहने के पश्चात सम्वत २००७ में भोपाल पन्च कल्याणक प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर तप कल्याणक के दिन विशाल समुदाय की हर्ष ध्वनि के बीच आपने मुनि व्रत धारण किया। सांसारिक सुखों समस्त साधनों के होते हुए भी, पारिवारिक एवं आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होते हुए,

उनको ठुकरा कर आपने वर्तमान काल में एक महान आदर्श उपस्थित किया है।

अध्ययन की ओर आरम्भ से ही आपकी विशेष रुचि थी। विद्यालय छोड़ने के बाद भी आपने धार्मिक अध्ययन जारी रखा और समयसार प्रवचनसार जैसे महान ग्रंथों का अध्ययन किया। अध्यात्म वाणी जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना आपके इसी अध्ययन और मनन का परिणाम है। संयम के साथ आध्यात्म विषय का इतना ज्ञान आपकी एक महान विशेषता है। धार्मिक एवं आध्यात्मिक विषय का अपूर्व ज्ञान होने के साथ २ आपका स्वभाव भी अत्यन्त शांत सरल एवं गम्भीर है। आपकी शैली अत्यन्त मधुर एवं प्रभावशाली है। आपका व्यक्तित्व इतना महान है कि दर्शन करते ही हृदय में अपूर्व शांति का अनुभव होने लगता है। इससे पूर्व आपने लगभग २० २५० आध्यात्मिक एवं महत्व पूर्ण शास्त्रों की रचना की है जिसमें अनेक जटिल विषयों का निर्णय किया है जो अभी तक अप्रकाशित हैं।

आप कभी भी अपने श्रोताओं को किसी मत को ग्रहण करने अथवा कुछ दान करने के लिये विवश नहीं करते। किन्तु आपका उपदेश इतना हृदयस्पर्शी होता है कि श्रोतागण स्वयमेव ही शक्ति अनुसार ग्रहण किये बिना नहीं रहते। आप लौकिक धार्मिक एवं सामाजिक झंझटों से सर्वथा विमुख रहते हैं आपका अधिकांश समय अध्ययन और मनन में ही व्यतीत होता है। समाज को आप जैसे मुनिराज पर महान गर्व है।

सिताबराय लखमीचन्द जैन,
भेलसा



# मूल्य जीवस्थानबोध

कारण निम्न लिखित दातार —

४००) प्रकाशक की ओर से।

१०१) सेठ राजमल जी
मालिक फर्म — चुन्नीलाल दौलतराम भोपाल।

१०१) सेठ तुलाराम जी हजारीलाल जी भोपाल।

१०१) सेठ मुरलीधरजी बापूलालजी जैसवाल जैन भोपाल।

७०३) कुल जोड़



## ❀ जीवस्थानदर्पण में भूल ❀

प्रेस की शिथिलता से यह ग्रन्थ दो वर्ष में छप कर तैयार हो पाया। और असावधानी के कारण जीवस्थानदर्पण में नपुंसक वेद व अपगत वेद छोड दिया है सो मूल ग्रन्थ से जानना चाहिये ज्ञानमार्गणा में मनपर्यय के साथ सयोग और अयोग का खाना बना दिया है। उसे काट कर ठीक कर लेना चाहिये।

# [illegible]

— [illegible]

| | |
|---|---|
| | [illegible] |
| | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| [illegible] | [illegible] |
| | [illegible] |

[illegible]

[illegible]

# भूमिका

( चौर प्रमण )

भाव कथन इस ग्रन्थ में, द्रव्य कथन नहिं लेश ।
शब्द अर्थ कर भ्रम गहें, तिनके मति न विशेष ॥

इस ग्रन्थ का श्री जिनेश किनने किया—श्रीमद्धरसेनाचार्य के शिष्य श्री पुष्पदन्त और भूतबली ने । यह ग्रन्थ किस अनुयोग का विषय है ।

जिन मत में अनुयोग चार होते हैं—प्रथमानुयोग चरणानुयोग, करणानुयोग द्रव्यानुयोग । इनमें क्रमश प्रत्येक का हेतु श्रद्धान आचरण व्यवहार जीव का ज्ञान और पारमार्थिक जीव का ज्ञान कराना है । आदि के दो अनुयोगों में द्रव्य का और अन्त के दो में भाव का कथन है । किन्तु करणानुयोग में द्रव्य का नाम लेकर विधान किया जाता है कि ये द्रव्य के भाव हैं जबकि द्रव्यानुयोग, में उन भावों का निषेध किया जाता है कि ये द्रव्य के भाव नहीं हैं । उपर्युक्त अनुयोगों में से यह ग्रन्थ करणानुयोग का विषय है ।

इस ग्रन्थ का विषय क्या है ? मार्गणा और गुणस्थानों में स्थित जीवों की संख्या आदि का ज्ञान कराना ।

इनसे लाभ क्या है ? इससे यह लाभ है कि जो अज्ञानी 'तो में मो में रजत खम्भ में छाय रहो जग माहीं' इत्यादि जीवाजीव में भेद नहीं करते उनके बोधार्थ व्यवहार जीव के स्वरूप का निरूपण किया गया है । मार्गणा १४ होती है । इनमें द्रव्य ( आधार ) और भाव ( आधेय ) का भेद किया जावे तो जिस तरह भाव मार्गणा के १४ भेद होते हैं उसी तरह द्रव्य मार्गणा के भी १४ भेद हो सकते है ।

जैसे मनुष्यादि शरीर को गति, स्पर्शनादि इन्द्रिय के चिह्न को इन्द्रिय, त्रस स्थावर जीवों के शरीर को काय, द्रव्य मन आदि को योग और स्त्री आदि के बाह्य चिह्न वा स्त्री आदि वेद इत्यादि द्रव्य मार्गणा।

मनुष्यादि प्रकृति के उदय को गति, स्पर्शनादि के क्षयोपशम को इन्द्रिय, त्रस स्थावर कर्म के उदय को काय, भावमन आदि के क्षयोपशम को योग और स्त्री आदि के भाव को स्त्री आदि वेद इत्यादि भाव मार्गणा।

इन द्रव्य और भाव मार्गणाओं में सभी जगह समानता है किन्तु वेद मार्गणा में असमानता है जैसे स्त्री स्त्री में द्रव्य वेद तो समान ही होता है किन्तु भाव वेद किसी स्त्री के पुरुष वेद, स्त्री वेद, और नपुंसक वेद हो सकते हैं इत्यादि। यदि द्रव्य के आश्रित वर्णन किया जाता तो प्रत्येक भाव वेद तीन प्रकार के द्रव्य वेद के आश्रय पाई जाने वाला वेद मार्गणा का कथन तीन प्रकार के अतिरिक्त ६ प्रकार का करना पड़ता और उसकी संख्यादि का विस्तार भी उसी तरह करना पड़ता इससे निष्प्रयोजन ग्रन्थ को विस्तार होता। क्योंकि द्रव्य से संसार एवं परमार्थ नहीं होता किन्तु भाव से होता है इसलिये भाव का कथन किया गया है।

खुलासा तात्पर्य यह है—कि पांचवें गुणस्थान तक तीनों द्रव्य वेदों के आश्रित ३ ३ भाव वेद पाये जाते हैं लेकिन छठवें गुणस्थान से अन्त तक द्रव्य पुरुष के आश्रित ही तीनों भाव वेद पाये जाते हैं ऐसा आशय स्वयं निकलता है पर यहां द्रव्य वेद की अपेक्षा नहीं की गई।

# प्रकाशक और प्रकाशन परिचय

श्री बाबूलालजी मन्यरदार ( फर्म भोगचन्द्र ब्रजलाल ) भोपाल श्री जैन समाज के प्रमुख व्यक्तियों में से हैं। आप प्राय संसार के सभी विभूतियों से परिपूर्ण हैं। धार्मिक व सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि रखते हैं। आपकी वृद्ध माता गंगाबाई जी को धर्म में प्रगाढ़ प्रेम है। अचानक माताजी नेत्र विहीन हो गई जिस से आप विशेष दु खी हुये और नत्र चिकित्सा योग्य न होते हुये भी मातृ प्रेम से प्रेरित होकर इन्दौर चिकित्सा हेतु ले गये। चिकित्सा से निराश होकर बड़वानी आदि सिद्ध क्षेत्रों की यात्रा कराके घर लौटे। इसी बीच में अनेक अतिशय के धारी श्री १०५ क्षुल्लक क्षीरसागर जी महाराज आध्यात्म वाणी के प्रफ संशोधनार्थ भोपाल पधारे। भोपाल समाज पर महाराज के सुमधुर व सरल प्रवचन द्वारा अपूर्व प्रभाव पड़ा यहां तक कि भगवान श्री नेमिनाथ स्वामी का विशाल मन्दिर जो दो साल से बगैर प्रतिष्ठा के था उसका पंच कल्याणक प्रतिष्ठा हुई उसी अवसर तप कल्याणक के समय विशाल जन समुदाय की हर्ष ध्वनि के बीच उक्त क्षुल्लक जी महाराज ने मुनिव्रत धारण किया। इस घटना से प्रेरित होकर जैन समाज ने भोपाल में ही चतुर्मास कराया व समाज ने प्रबन्ध हेतु एक समिति का निर्माण किया। उस समिति के मन्त्री श्री बाबूलाल जी नियुक्त हुये।

एक समय जब महाराज श्री धवल सिद्धान्त में विवाद ग्रस्त "संयद" शब्द का निर्णय कर रहे थे। उसे देख श्री बाबूलाल जी को अपनी माता जी के नेत्र विहीनता की याद आ गई। तब उन्होंने माता जी के दर्शनावरणी कर्म के क्षयोपशमार्थ इस ग्रन्थ को अपनी ओर से प्रकाशित कराया।

आप की ही सद् प्रेरणा के फलस्वरूप आज हमें सरल, स्पष्ट और संक्षेप रूप में इस आगमवाणी जैसे रहस्य एवं महत्व पूर्ण ग्रन्थ का अवलोकन करने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

सूरजमल जैन विशारद, भोपाल

# शब्द-कोष

अन्तमुहूर्त—आवली से ऊपर और २ घड़ी से एक समय कम काल को कहते हैं।

अतीत—१ भूत काल, २ बीता हुआ।

अनागत—१ भविष्य काल २ आने वाला।

अनादि अनन्त—१ आदि अन्त रहित २ जो कभी पूरा न हो।

अनादि सान्त—अनादि होकर भी अन्त सहित।

अनिन्द्रिय—१ इन्द्रिय रहित, २ ज्ञान जैसी।

अनिवृत्तिकरण—१ समान भाव, २ बादर कषाय के उदय की [illegible] ३ नौवें गुणस्थान का नाम।

अनुभय—सत्यासत्य रहित।

अपर्याप्त—१ अपूर्ण, २ शरीर पर्याप्ति की पूर्णता से रहित।

अपूर्वकरण—१ जो भाव पहिले कभी न भये हों २ अनोखे, ३ विचित्र।

अर्धपुद्गल परिवर्तन—असंख्यात कालवत्।

अवसर्पिणी—१ अपसर्पिणी, २ जिस काल में उत्तरोत्तर आयु आदि की हानि होती जाय ३ ह्रास युत, ४ हानि युत।

अवहार काल—१ अपहृत काल, २ पूरा काल।

असंयत सम्यग्दृष्टि—१ देश संयम सकल संयम से रहित सदाचारी, २ चतुर्थ गुणस्थानवर्ती ३ अव्रत सम्यग्दृष्टि।

आयाम—लम्बाई काल के समय का प्रमाण।

आवली—असंख्यात समय वाली संख्या।

उत्सर्पिणी—अवसर्पिणी से उलटा अर्थ।

उपर्युक्त—ऊपर कहा हुआ।

उपशान्त—१ इन्द्रिय निग्रह, जिसकी कषाय उपशम को प्राप्त हो चुकी है।

कर्मणकाययोग—१ कर्म योग, २ सब शरीरों की उत्पत्ति का कारण।

कोडाकोडाकोडी—करोड़ को चार करोड़ से गुणित संख्या।

कोडाकोडाकोडाकोडी—करोड़ को तीन बार करोड़ से गुणित संख्या।

गुणहानि—गुणाकार रूप हीन हीन द्रव्य जिसमें पाये जावें।

घन—लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई में समान किसी संख्या को तीन बार परस्पर गुणित करने पर प्राप्त संख्या जैसे, ५×५×५=१२५।

जगप्रतर—जग श्रेणी का वर्ग।

जगश्रेणी—अद्धापल्य की अर्धच्छेद राशि के असंख्यातवें भाग मात्र घनांगुलों को रखकर व हें परस्पर गुणित करने पर प्राप्त राशि।

छेदोपस्थापना—पापों का प्रायश्चित लेकर पुन व्रत धारण करने को छेदोपस्थापना कहते हैं।

निर्वृत्त पर्याप्त—१ पूर्ण होने वाला, २ शरीर पर्याप्त पूर्ण होने वाला।

पर्याप्त—१ पूर्ण, २ शरीर पर्याप्त की पूर्णता सहित।

परिहार विशुद्धि—हिंसादिनिवृत्ति हिंसा रहित निर्मल प्रवृत्ति।

पल्य—४५ अंक प्रमाण संख्या को पल्य कहते हैं —

पल्यशत पृथक्त्व—तीन सौ पल्यों से अधिक व नौ सौ पल्यों से कम।

पूर्वकोटि—पूर्व को एक करोड़ से गुणा करने पर प्राप्त संख्या।

पूर्व—८४ पूर्वाङ्ग का एक पूर्व होता है।

पूर्वाङ्ग—८४ लाख वर्ष काल को पूर्वाङ्ग कहते हैं।

पूर्वकोटि पृथक्त्व—तीन पूर्व कोटियों से अधिक नौ पूर्वकोटियों से कम।

प्रतिपन्न—१ प्राप्त, २ स्थित

प्रतिभाग—१ भाजक २ भागहार।

मनुष्यनी—भाव स्त्री।

मार्गणा—१ जिनमें जीवों को खोजा जाय २ जिनसे जीव खोजे जाय।

मास पृथक्त्व—तीन मास से अधिक व नौ मास से कम।

यथाख्यात—मोहनीय उपशम अथवा क्षय की अवस्था।

योनिमती—तिर्यंचाणी।

रूपाधिक—एक अंक से अधिक।

लब्ध—प्राप्त हुआ।

लब्ध्यपर्याप्तक—१ अपर्याप्त, २ जिसकी पर्याप्ति पूर्ण न हो।

लोक नाली—त्रस नाली।

वर्ग—समान संख्याओं का गुणनफल।

वर्गमूल—विवक्षित संख्या जिसके वर्ग रूप हो जैसे २५ का ५।

वर्ष पृथक्त्व—तीन वर्ष से अधिक व नौ वर्ष से कम।

विग्रह गति—परभव गति।

विभंग ज्ञानी—कुअवधि।

विष्कम्भ सूची—गोला तल के बीच का विस्तार।

शतपृथक्त्व—तीन सौ से अधिक व नौ सौ से कम।

शलाकारूप—एक प्रकार का नाम, २, पद विशेष।

सचित—इकट्ठा।

संयतासंयत—१ कुछ संयम कुछ असंयम २ मिश्रित, ३ देश विरति।

सम्यग्मिथ्यादृष्टि—१ मिश्र २ समीचीन व मिथ्या श्रद्धान से मिश्रित।

सागर—१० कोड़ाकोड़ी पल्य का १ सागर।

सागरशत पृथक्त्व—तीन सौ सागर से अधिक व नौ सौ सागर से कम।

सादिसान्त—आदि अन्त सहित।

साधिक—कुछ अधिक।

सूच्यांगुल—अद्धापल्य की अर्धच्छेद राशि प्रमाण पल्यों को रखकर परस्पर गुणित करने पर प्राप्त संख्या।

सूक्ष्मसाम्परायिक—केवल सूक्ष्म लोभ का उदय।

---

# स्त्री-मुक्ति निषेध

इस भव परभव नहिं चहे जो धारे जिन धर्म।
फिर क्यों नारी लिंग को पृथक बताया भर्म ॥१॥

नारी चित्त में अधिक है, राग द्वेष भय ग्लान।
मायाचार विचित्र है, इससे क्यों न ज्ञान ॥ ॥

विषय भोग लज्जा अधिक चित्त विशुद्ध न गात।
होवे सहसा इन्हों के मासिक लोहू पात ॥ ॥

शिथिलाचरण स्वभावसे, शिथिला कहैं बखान।
इस कारण तिय भाव में, पुरुषार थ मत जान ॥४॥

नारि योनि कुच नाक में, कांख नाभि के थ न।
सूक्ष्म नर उत्पत्ति लखी, जिनवर केवल ज्ञान ॥५॥

इन एकहु विन दोष के, है न नारि जग पूर।
ढका शरीर न मनुज सम, इससे वस्त्र जरूर ॥६॥

कोई द न शुद्ध धर सूत्र पाठ युत होय।
घोर चरण आचरति यदि, तदपि न मुक्ता होय ॥७॥

इस कारणसे पृथक है वस्त्र सहित तिय भेष।
योग्य चरण युत अर्जिका कुलवय रूप विशेष ॥८॥

ाद —इन दोहों का आशय द्र य स्त्री स है।

---

# पर्याप्तापर्याप्त दर्पण

| नाम गति | मिथ्या॰ | सासादन | मिश्र | असंयत॰ | संयमासंयम | मत्त संय[illegible] |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सामान्य नारकी | पर्याप्ता पर्याप्त | पर्याप्त | पर्याप्त | पर्याप्ता पर्याप्त | × | × |
| प्रथम पृथ्वी | ,, | ,, | ,, | ,, | × | × |
| शेष पृथ्वी | ,, | ,, | ,, | पर्याप्त | × | × |
| सामान्य तिर्यंच | ,, | पर्याप्ता पर्याप्त | ,, | पर्याप्ता पर्याप्त | पर्याप्त | × |
| सामान्य पंचेन्द्रिय निवृत्ति तिर्यंच | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | × |
| योनिमती | ,, | ,, | ,, | पर्याप्त | ,, | × |
| सामान्य मनुष्य | | ,, | ,, | पर्याप्ता पर्याप्त | ,, | पर्याप्[illegible] |
| निवृत्ति पर्याप्त मनुष्य | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, | ,, |
| भाव मनुष्यणी | ,, | ,, | ,, | पर्याप्त | ,, | ,, |
| सामान्य देव | | ,, | ,, | पर्याप्ता पर्याप्त | × | × |
| सौधर्म से ग्रैवेयक तक | ,, | ,, | ,, | | × | × |
| अनुदिश से अंत तक | × | × | × | ,, | × | × |
| भवनत्रिक और नरक देवी | पर्याप्ता पर्याप्त | पर्याप्ता पर्याप्त | पर्याप्ति | पर्याप्त | × | × |



॥ श्री परमात्मने नम ॥

श्री १०८ मुनि क्षीरसागरजी महाराज प्रणीत

# आगमवाणी.

## प्रथम भाग.

मंगलाचरण और ग्रंथ परिचय

सो० नमि के वीर जिनेश, धवला का आधार ले।
जीव थान उपदेश, भाषा मय श्रुत मे करूँ ॥

णमो अरिहंताण, णमो सिद्धाण, णमो आइरियाण
णमो उवज्झायाण णमो लोए सव्वसाहूण ॥१॥

जीवों के चौदह गुणस्थानों को जानने के लिये पहिले मार्गणा स्थान जानना चाहिये ॥२॥ वे कौन हैं ॥३॥ गति, इन्द्रिय, काय, योग, वेद, कषाय, ज्ञान, सयम, दर्शन, लेश्या, भव्यत्व, सम्यक्त्व, संज्ञी और आहार ये चौदह मार्गणा हैं ॥४॥

इन मार्गणाओं में चौदह गुण स्थान जानने के लिये आगे कहे गये आठ अधिकार समझना चाहिये ॥५॥ वे कौन हैं? ॥६॥ सद, सग्या, क्षेत्र, स्पर्शन, काल, अन्तर, भाव, अल्प बहुत्व ये आठ अधिकार हैं ॥७॥ सत् कथन, सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार का है ॥८॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥९॥ सासादन सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं ॥१०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥११॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव होते हैं ॥१२॥ सयतासयतजीव होते हैं ॥१३॥ प्रमत्त सयत जीव होते हैं ॥१४॥ अप्रमत्त-सयत जीव होते हैं ॥१५॥ अपूर्वकरण चढ़ने वाले उपशामक और क्षपक जीव होते हैं ॥१६॥ अनिवृत्तिकरण चढ़ने वाले उपशामक और क्षपक जीव होते हैं ॥१७॥ सूक्ष्म सापरा-यिक चढ़ने वाले उपशामक और क्षपक जीव होते हैं ॥१८॥ उपशांत कषाय जीव होते हैं ॥१९॥ क्षीण-कषाय जीव होते हैं ॥२०॥ सयोग केवली जीव होते हैं ॥२१॥ अयोगकेवली जीव होते हैं ॥२२॥ सिद्ध जीव होते हैं ॥२३॥

इति सामान्य गुणस्थान कथन

विशेष गतिमार्गणा की अपेक्षा नरकगति, तिर्यंचगति, मनुष्य-गति देवगति और सिद्धगति होती है ॥२४॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुण स्थान तक नारकी होते हैं ॥२५॥ मिथ्या-दृष्टि से लेकर सयतासयत गुण स्थान तक तिर्यंच होते हैं

॥२६॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगकेवली गुणस्थान तक मनुष्य होतेहैं ॥२७॥ मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक देव होते हैं ॥२८॥ एकेन्द्रिय से लेकर असैनी पचेन्द्रिय तक केवल तिर्यंच होते हैं ॥२६॥ सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक चारोंगति वाले होते हैं ॥३०॥ सयतासयत गुणस्थान में तिर्यंच और मनुष्य होते हैं ॥३१॥ आगे केवल मनुष्य होते हैं ॥३२॥

इति गति मार्गणा

इन्द्रिय मार्गणा की अपेक्षा एकेन्द्रिय, दोइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौइन्द्रिय, पचेन्द्रिय और अनिन्द्रिय जीव होते हैं ॥३३॥ एकेन्द्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं बादर और सूक्ष्म वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥३४॥ दोइन्द्रिय से लेकर चौइन्द्रिय तक के जीव पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं॥३५॥ पचेन्द्रिय जीव दो प्रकार के होते हैं सैनी और असैनी वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥३६॥ एकेन्द्री से लेकर असैनी पचेन्द्रिय तक मिथ्यादृष्टि नामक प्रथम गुणस्थान में ही होते हैं ॥३७॥ इन असैनी पचेन्द्रिय मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोग केवली गुणस्थान तक पचेन्द्रिय जीव होते हैं॥३८॥ उनसे पर सिद्ध होते हैं ॥३६॥

इति इन्द्रिय मार्गणा

काय मार्गणा की अपेक्षा पृथ्वीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, वनस्पतिकायिक, त्रसकायिक और काय

रहित जीव होते हैं ॥४०॥ पृथ्वीकायिक से लेकर वायुकायिक तक जीव दो प्रकार के होते हैं बादर और सूक्ष्म वे दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥४१॥ वनस्पतिकायिक जीव दो प्रकार के होते हैं प्रत्येक शरीर और साधारण शरीर। प्रत्येक दो प्रकार के होते हैं पर्याप्त और अपर्याप्त। साधारण दो प्रकार के होते हैं बादर और सूक्ष्म ये दोनों पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥४२॥ त्रसकायिक दो प्रकार के होते हैं पर्याप्त और अपर्याप्त ॥४३॥ पृथ्वीकायिक से लेकर वनस्पतिकायिक तक के जीव मिथ्यादृष्टि नामक प्रथम गुणस्थान में ही होते हैं ॥४४॥ दोइन्द्रिय से लेकर अयोगकेवली तक त्रस जीव होते हैं ॥४५॥ बादर एकेन्द्रिय से लेकर अयोगकेवली तक बादर कायिक जीव होते हैं ॥४६॥ उनसे परे सिद्ध होते हैं ॥४७॥

इति काय मार्गणा

योग मार्गणा की अपेक्षा मनोयोगी, वचनयोगी, काययोगी और अयोगी जीव होते हैं ॥४८॥ मनोयोग चार प्रकार का होता है सत्यमनोयोग, असत्यमनोयोग, उभयमनोयोग और अनुभयमनोयोग ॥४९॥ सत्यमनोयोग और अनुभयमनोयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग केवली तक होते हैं ॥५०॥ असत्यमनोयोग और उभयमनोयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीण कषाय तक होते हैं ॥५१॥ वचनयोग चार प्रकार का होता है, सत्यवचनयोग, असत्यवचनयोग, उभयवचनयोग,

और अनुभयवचनयोग ॥५२॥ अनुभयवचनयोग द्वीन्द्रिय से लेकर सयोग केवली तक होता है ॥५३॥ सत्यवचनयोग सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग केवली तक होता है ॥५४॥ असत्यवचनयोग और उभयवचनयोग, सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥५५॥ काययोग सात प्रकार का होता है—औदारिक, औदारिकमिश्र, वैक्रियक वैक्रियकमिश्र, आहारक, आहारकमिश्र और कार्माण ॥५६॥ तिर्यंच और मनुष्यों के औदारिक और औदारिकमिश्रकाययोग होता है ॥५७॥ देव और नारकियों के वैक्रियक, वैक्रियकमिश्र-काययोग होते हैं ॥५८॥ आहारक और आहारकमिश्र ऋद्धि-धारी मुनियों के होता है ॥५९॥ विग्रहगति वाले जीवों के तथा समुद्घात को प्राप्त केवली के कार्माणकाययोग होता है ॥६०॥ औदारिक और औदारिकमिश्र एकेन्द्रिय से लेकर सयोग केवली तक होता है ॥६१॥ वैक्रियक और वैक्रियक-मिश्र सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक होता है ॥६२॥ आहारक और आहारकमिश्र एक प्रमत्त गुणस्थान में ही होता है ॥६३॥ कार्माणकाययोग एकेन्द्रिय से लेकर सयोग केवली तक होता है ॥६४॥ सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोग केवली तक मनोयोग, वचनयोग और काययोग होता है ॥६५॥ द्वीन्द्रिय से लेकर असैनीपंचेन्द्रिय तक वचनयोग और काययोग होता है ॥६६॥ एकेन्द्रिय जीवों के काययोग

होता है ॥६८॥ काययोग पर्याप्तकों के और अपर्याप्तकों के होता है ॥६९॥ छह पर्याप्तियां और छह अपर्याप्तियां होती हैं ॥७०॥ वे सैनी मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुणस्थान में होती हैं ॥७१॥ पांच पर्याप्तियां और पांच अपर्याप्तियां होती हैं ॥७२॥ वे दोइन्द्रिय से लेकर असैनीपचेन्द्रिय तक होती हैं ॥७३॥ चार पर्याप्तियां और चार अपर्याप्तियां होती हैं ॥७४॥ वे एकेन्द्रिय जीवों के होती हैं ॥७५॥ औदारिककाययोग पर्याप्तकों के और औदारिकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७६॥ वैक्रियककाययोग पर्याप्तकों के और वैक्रियकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७७॥ आहारककाययोग पर्याप्तकों के और आहारकमिश्रकाययोग अपर्याप्तकों के होता है ॥७८॥ सामान्य से नारकी जीव मिथ्यादृष्टि और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥७९॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८०॥ इसी प्रकार प्रथम पृथ्वी में नारकी होते हैं ॥८१॥ दूसरी पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक नारकी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८२॥ सासादन सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८३॥ सामान्य से तिर्यंच, मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और सयतासयतगुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८५॥

इसी प्रकार सामान्य पंचेन्द्रियतिर्यंच और निर्वृत्तिपर्याप्तपंचेन्द्रियतिर्यंच होते हैं ॥८६॥ योनिमती पंचेन्द्रियतिर्यंच-मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८७॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयत और संयतासंयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥८८॥ सामान्य से मनुष्य मिथ्यादृष्टि, सासादन और असंयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥८९॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि, संयतासंयत और सब संयत गुणस्थानों में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९०॥ इसी प्रकार निर्वृतिपर्याप्त मनुष्य होते हैं ॥९१॥ मनुष्य स्त्रियाँ मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होती हैं ॥९२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयत संयतासंयत और सब संयत गुण स्थानों में नियम से पर्याप्त होती हैं ॥९३॥ सामान्य से देव मिथ्यादृष्टि, सासादन और असंयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥९४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९५॥ भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिषी देव और समस्त देवियां मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होती हैं ॥९६॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होती हैं ॥९७॥ सौधर्म स्वर्ग से लेकर ग्रैवेयक तक के देव मिथ्यादृष्टि, सासादन और असंयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥९८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में नियम से पर्याप्त होते हैं ॥९९॥ नव अनुदिशों से लेकर सर्वार्थसिद्धि तक

असंयत गुणस्थान में पर्याप्त और अपर्याप्त होते हैं ॥१००॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्रीवेद, पुरुषवेद, नपुंसकवेद और वेद-रहित जीव होते हैं ॥१०१॥ स्त्रीवेद और पुरुषवेद वाले जीव असंज्ञी मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक होते हैं ॥१०२॥ एकेन्द्रिय से लेकर अनिवृत्तिकरण गुण-स्थान तक नपुंसक वेद वाले होते हैं ॥१०३॥ आगे वेद रहित जीव होते हैं ॥१०४॥ नारकी जीव चारों ही गुणस्थानों में नपुंसक वेदी होते हैं ॥१०५॥ तिर्यंच एकेन्द्रिय से लेकर चौ इन्द्रिय तक नपुंसक वेदी होते हैं ॥१०६॥ असंज्ञी पंचेन्द्रिय से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक तीनों वेद वाले होते हैं ॥१०७॥ मनुष्य मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक तीनों वेद वाले होते हैं ॥१०८॥ आगे वेद रहित जीव होते हैं ॥१०९॥ देव चारों ही गुणस्थानों में स्त्रीवेद और पुरुष वेद वाले होते हैं ॥११०॥

इति वेद मार्गणा

कषायमार्गणा में क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी, लोभकषायी और कषाय रहित जीव होते हैं ॥१११॥ एके-न्द्रिय से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक क्रोधकषायी मानकषायी, मायाकषायी जीव होते हैं ॥११२॥ एकेन्द्रिय से लेकर सूक्ष्मसाम्पराय गुणस्थान तक लोभकषायी जीव होते हैं ॥११३॥ कषायरहित जीव उपशान्तकषाय से लेकर अयोगी

गुणस्थान तक होते हैं ॥११४॥

इति कषाय मार्गणा

ज्ञानमार्गणा की अपेक्षा कुमति, कुश्रुति, कुअवधि, मति, श्रुत, अवधि, मन पर्यय और केवल ज्ञान वाले जीव होते हैं ॥११५ एकेन्द्रिय से लेकर सासादन गुणस्थान तक कुमति, कुश्रुतज्ञान वाले होते हैं ॥११६॥ कुअवधिज्ञान सैनी मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवों के होता है ॥११७॥ पर्याप्तकों के ही होता है अपर्याप्तकों के नहीं होते हैं ॥११८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में आदि के तीनों ही ज्ञान कुमति, कुश्रुत और कुअवधि से मिश्रित होते हैं ॥११९॥ मति, श्रुत और अवधिज्ञानी असंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१२०॥ मन पर्यय ज्ञानीजीव प्रमत्तसंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१२१॥ केवलज्ञानीजीव सयोगकेवली अयोगकेवली और सिद्ध होते हैं ॥१२२॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयम मार्गणा की अपेक्षा सामायिक, छेदोपस्थापना, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्मसांपराय, यथाख्यात, संयतासंयत और असंयत जीव होते हैं ॥१२३॥ संयत जीव प्रमत्त से लेकर अयोगकेवली गुणस्थान तक होते हैं ॥१२४॥ सामायिक और छेदोपस्थापना संयतजीव प्रमत्तसंयत से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक होते हैं ॥१२५॥ परिहारविशुद्धि जीव प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में होते हैं ॥१२६॥ सूक्ष्म सांपराय संयत जीव उप-

सूक्ष्म सांपराय गुणस्थान में ही होते हैं ॥१२७॥ यथाख्यात जीव उपशान्त कषाय से लेकर अयोगकेवली गुणस्थान तक होते हैं ॥१२८॥ संयतासंयत जीव एक संयतासंयत गुणस्थान में ही होते हैं ॥१२९॥ असंयतजीव एकेन्द्रिय से लेकर असंयत गुणस्थान तक होते हैं ॥१३०॥

इति संयम मार्गणा

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शन, अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन और केवल दर्शन वाले जीव होते हैं ॥१३१॥ चक्षुदर्शन वाले जीव चौ इन्द्रिय से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१३२॥ अचक्षुदर्शन वाले जीव एकेन्द्रिय से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१३३॥ अवधिदर्शनवाले जीव असंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१३४ केवल-दर्शन वाले जीव सयोगकेवली, अयोगकेवली और सिद्ध होते हैं ॥॥१३५॥

इति दर्शन मार्गणा

लेश्यामार्गणा की अपेक्षा कृष्ण, नील, कापोत, पीत पद्म, शुक्ल लेश्यावाले और अलेश्यावाले जीव होते हैं ॥१३६॥ कृष्ण नील और कापोत लेश्यावाले जीव एकेन्द्रिय से लेकर असंयत गुणस्थान तक होते हैं ॥१३७॥ पीत और पद्मलेश्या वाले जीव सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक होते हैं ॥१३८॥ शुक्ल लेश्यावाले जीव सैनी मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोगकेवली गुणस्थान तक होते हैं ॥१३९॥ आगे लेश्या-

सहित जीव होते हैं ॥१४०॥

इति लेश्या मार्गणा

भव्यमार्गणा की अपेक्षा भव्य और अभव्य जीव होते हैं ॥१४१॥ भव्यजीव एकेन्द्रिय से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक होते हैं॥१४२॥ अभव्यजीव एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी मिथ्यादृष्टि गुणस्थान तक होते हैं १४३॥

इति भव्य मार्गणा

सम्यक्त्वमार्गणा की अपेक्षा क्षायिक, वेदक, उपशम, सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं ॥१४४॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीव असंयत से लेकर अयोगकेवली गुणस्थान तक होते हैं ॥१४५॥ वेदकसम्यग्दृष्टि जीव असंयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक होते हैं ॥१४६॥ उपशम सम्यग्दृष्टि जीव असंयत से लेकर उपशान्त कषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१४७॥ सासादनसम्यग्दृष्टि जीव एक सासादन गुणस्थान में ही होते हैं ॥१४८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव एक सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में ही होते हैं ॥१४९॥ मिथ्यादृष्टि जीव एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी मिथ्यादृष्टि तक होते हैं ॥१५०॥ सामान्य से नारकी जीव असंयत गुणस्थान में क्षायिक वेदक और उपशमसम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१५१॥ इसप्रकार प्रथम पृथ्वी में नारकी होते हैं ॥१५२॥ दूसरी पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक नारकी जीव असंयत गुणस्थान में क्षायिकसम्यग्दृष्टि नहीं होते, शेष दो सम्यग-

दर्शनों से युक्त होते हैं ॥१५३॥ तिर्यंच असंयत गुणस्थान में क्षायिक वेदक और उपशम सम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१५४॥ संयतासंयत गुणस्थान में क्षायिकसम्यग्दृष्टि नहीं होते हैं, शेष के दो सम्यग्दर्शनों से युक्त होते हैं ॥१५५॥ इसी प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच और पंचेन्द्रियनिर्वृत्तिपर्याप्ततिर्यंच होते हैं ॥१५६॥ योनिमती पंचेन्द्रिय तिर्यंच में असंयत और संयतासंयत गुणस्थान में क्षायिकसम्यग्दर्शन नहीं होता, शेष के दो सम्यग्दर्शनों से युक्त होते हैं ॥१५७॥ मनुष्य असंयत, संयतासंयत और संयत गुणस्थानों में क्षायिक वेदक और उपशम सम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१५८॥ इसीप्रकार निर्वृत्ति पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यनियों में भी जानना चाहिये ॥१५९॥ देव असंयत गुणस्थान में क्षायिक, वेदक और उपशम सम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१६०॥ भवनवासी, व्यंतर और ज्योतिषी देव तथा समस्त देवियाँ असंयत गुणस्थान में क्षायिक सम्यग्दर्शन वाली नहीं होती हैं शेष के दो सम्यग्दर्शनों वाली होती हैं ॥१६१॥ सौधर्मस्वर्ग से लेकर सर्वार्थसिद्धि तक के देव असंयत गुणस्थान में क्षायिक वेदक और उपशम सम्यग्दृष्टि होते हैं ॥१६२॥

इति सम्यक्त्व मार्गणा

संज्ञी मार्गणा की अपेक्षा संज्ञी और असंज्ञी जीव होते हैं ॥१६३॥ संज्ञी जीव मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक होते हैं ॥१६४॥ असंज्ञी जीव एकेन्द्रिय से लेकर

असैनी पंचेन्द्रिय तक होते हैं ॥१६५॥ आहारक मार्गणा से आहारक और अनाहारक जीव होते हैं ॥१६६॥ आहारक जीव एकेन्द्रिय से लेकर सयोगकेवली गुणस्थान तक होते हैं ॥१६७॥ विग्रहगतिवाले जीव, समुद्घात केवली, अयोगकेवली और सिद्धजीव अनाहारक होते हैं ॥१६८॥

इति सत् अधिकार

## अथ संख्याधिकार

संख्या कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीव अनन्त हैं ॥२॥ काल की अपेक्षा अनंतानंत अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी के द्वारा पूरे नहीं होते ॥३॥ क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त लोक प्रमाण है ॥४॥ उपर्युक्त तीनों प्रमाणों का ज्ञान ही भाव प्रमाण है ॥५॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती पल्य के असंख्यातवें भाग मात्र हैं इन चार गुणस्थानों में प्रत्येक की अपेक्षा अन्तर्मुहूर्त से पल्य पूरा होता है ॥६॥ प्रमत्त जीव कोटि पृथक्त्व हैं ॥७॥ अप्रमत्त जीव संख्यात हैं ॥८॥ चारों गुणस्थानों के उपशमक जघन्य की अपेक्षा, एक या दो अथवा तीन और उत्कृष्ट रूप से चौवन होते हैं ॥९॥ काल की अपेक्षा संचित हुये सभी जीव संख्यात होते हैं ॥१०॥ चारों गुणस्थानों के क्षपक और अयोगिकेवली

जीव जघन्य अपेक्षा एक या दो अथवा तीन, और उत्कृष्ट रूप से एकसौ आठ होते हैं ॥११॥ काल की अपेक्षा संचित हुये संख्यात होते हैं ॥१२॥ सयोगिकेवली जीव जघन्य एक या दो अथवा तीन, और उत्कृष्ट रूप से एकसौ आठ होते हैं ॥१३॥ काल की अपेक्षा लक्ष पृथक्त्व होते हैं ॥१४॥

इति सामान्य कथन

विशेष गतिमार्गणा से नरकगति में सामान्य नारकियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥१५॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात, अवसर्पिणियाँ और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥१६॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगप्रतर के असंख्यातवें भागमात्र असंख्यात जगश्रेणी प्रमाण हैं। उन जगश्रेणियों की विष्कम्भसूची, सूच्यंगुल के प्रथम वर्गमूल को उसी के द्वितीय वर्गमूल से गुणित करने पर जितना लब्ध आवे उतनी है ॥१७॥ सासादन से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान हैं ॥१८॥ इसी प्रकार प्रथम पृथ्वी में नारक जीव राशि है ॥१९॥ दूसरी पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक प्रत्येक पृथ्वी के नारकियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥२०॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥२१॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगश्रेणी के असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। उस जगश्रेणी के असंख्यातवें भाग की जो श्रेणि है उसका आयाम असंख्यात कोटि योजन है, जिस असंख्या

कोटि योजन का प्रमाण, जगश्रेणी के सख्यात वर्गमूलों के परस्पर गुणा करने से जितना प्रमाण उत्पन्न हो उतना है ॥२२॥ सासादन से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान मे पल्य के असख्यातवें भाग है ॥२३॥ तिर्यंच गति के सामान्यतिर्यंचो में मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासयत तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती सामान्य कथन के समान हैं ॥२४॥ सामान्य पचेन्द्रिय तिर्यञ्च मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥२५॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥२६॥ क्षेत्र की अपेक्षा देवों के अवहारकाल से असख्यात गुणेहीन काल से जगप्रतर पूरा होता है ॥२७॥ सासादान से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पल्य के असख्यातवें भाग हैं ॥२८॥ पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं॥२९॥ कालकी अपेक्षा असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥३०॥ क्षेत्र की अपेक्षा देव, अवहारकाल से सख्यातगुणे हीन काल में जगप्रतर पूरा होता है ॥३१॥ सासादन से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव पल्य के असख्यातवें भाग हैं ॥३२॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥३३॥ कालकी अपेक्षा असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥३४॥ क्षेत्र की अपेक्षा देवों के अवहारकाल से सख्यातगुणे काल से

जगमतर पूरा होता है ॥३५॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥३६॥ पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव असंख्यात हैं ॥३७॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों द्वारा पूरे होते हैं ॥३८॥ क्षेत्र की अपेक्षा देवों के अवहारकाल से असंख्यातगुणे हीन काल से जगमतर पूरा होता है ॥३९॥ सामान्य मनुष्यों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥४०॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों द्वारा पूरे होते हैं ॥४१॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगश्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, उस श्रेणी का आयाम असंख्यात कोटि योजन है। सूच्यंगुल के प्रथम वर्गमूल को सूच्यंगुल के तृतीय वर्गमूल से गुणित करके जो लब्ध आवे उसे शलाकारूप से स्थापित करके रूपाधिक जगश्रेणी पूरी होती है ॥४२॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में संख्यात हैं ॥४३॥ प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में संख्यात हैं ॥४४॥ मनुष्य पर्याप्तों में मिथ्यादृष्टि मनुष्य कोड़ाकोड़ाकोड़ि के ऊपर कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ि के नीचे छह वर्गों के ऊपर और सात वर्ग के नीचे हैं ॥४५॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में संख्यात हैं ॥४६॥ प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में संख्यात हैं ॥४७॥ मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि

तीन कोड़ाकोड़ाकोड़ी के ऊपर और कोड़ाकोड़ाकोड़ाकोड़ी के नीचे छठवें वर्ग के ऊपर और सातवें वर्ग के नीचे मध्य की संख्या-प्रमाण है ॥४८॥ सासादन से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव संख्यात हैं ॥४९॥ लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य असंख्यात हैं ॥५०॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥५१॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगश्रेणी के असंख्यातवें भागप्रमाण हैं। उस जगश्रेणी के असंख्यातवें भागरूप श्रेणी का आयाम असंख्यात करोड़ योजन है। सूच्यंगुल के तृतीय वर्गमूल गुणित प्रथम वर्गमूल को शलाकारूप से स्थापित करके रूपाधिक जगश्रेणी पूरी होती है ॥५२॥ देवगति प्रतिपन्न सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥५३॥ काल की अपेक्षा असंख्याता-संख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥५४॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगत्प्रतर के दो सौ छप्पन अंगुलों के वर्गरूप प्रतिभाग से देव राशि आती है ॥५५॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि पल्य के असंख्यातवें भाग हैं। ॥५६॥ भवनवासी देवों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥५७॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥५८॥ क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात जगश्रेणी प्रमाण हैं जो असंख्यात जगश्रेणियां जगत्प्रतर के असंख्यातवें भागप्रमाण हैं उन असंख्यात जगश्रेणियों की विष्कम्भसूची, सूच्यंगुल को सूच्यंगुल

के प्रथम वर्गमूल से गुणित करके जो लब्ध आवे, उतनी है ॥५९॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि सामान्य प्रथम के समान हैं ॥६०॥ व्यन्तर देव मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥६१॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों द्वारा पूरे होते हैं ॥६२॥ क्षेत्र की अपेक्षा जगप्रतर के संख्यात सौ योजनों के वर्गरूप प्रतिभाग से राशि आती है ॥६३॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि पल्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥६४॥ ज्योतिषी देवों की संख्या सामान्य देवों की संख्या से कुछ कम है ॥६५॥ सौधर्म और ऐशान कल्पवासी देवों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥६६॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों द्वारा पूरे होते हैं ॥६७॥ क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात जगश्रेणी प्रमाण हैं। जो असंख्यात जगश्रेणियों का प्रमाण जगप्रतर के असंख्यातवें भाग है उन असंख्यात जगश्रेणियों की विष्कम्भसूची सूच्यंगुल के द्वितीय वर्गमूल को तृतीय वर्गमूल से गुणा करने पर जितना लब्ध आवे, उतनी है ॥६८॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि, और असंयत सम्यग्दृष्टि पल्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥६९॥ सनत्कुमार से लेकर सहस्रार तक के कल्पवासी देव सातवीं पृथ्वी के नारकियों के समान हैं ॥७०॥ आनत से लेकर नव ग्रैवेयक तक विमानवासी देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक

गुणस्थान में पल्य के असख्यातवें भाग हैं। इन उपर्युक्त जीवराशियों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त से पल्य पूरा होता है ॥७१॥ अनुदिश विमान से लेकर अपराजित विमान तक असंयत सम्यग्दृष्टि देव पल्य के असख्यातवें भाग हैं। इन उपर्युक्त जीवराशियों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त से पल्य पूरा होता है ॥७२॥ सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देव सख्यात हैं ॥७३॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रियमार्गणा से सर्वप्रकार के एकेन्द्रिय जीव अनन्त हैं ॥७४॥ कालकी अपेक्षा अनन्तानन्त अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे नहीं होते है ॥७५॥ क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त लोकप्रमाण हैं ॥७६॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, और चतुरिन्द्रिय जीव तथा उन्हीं के पर्याप्त अपर्याप्त जीव असख्यात हैं ॥७७॥ काल-की अपेक्षा असख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥७८॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूच्यगुल के असख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है पर्याप्तों से सूच्यगुल के असख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से और अपर्याप्तों से सूच्यगुल के असख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥७९॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त मिथ्यादृष्टि असख्यात हैं ॥८०॥ कालकी अपेक्षा असख्यातासख्यात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥८१॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूच्यगुल के असख्यातवें भाग के वर्ग-रूप प्रतिभाग से और सूच्यगुल के सख्यातवें भाग के वर्गरूप

प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥८२॥ सासादन से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में द्रव्य से असंख्यातवें भाग हैं ॥८३॥ पंचेन्द्रिय अपर्याप्त जीव असंख्यात हैं ॥८४॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥८५॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥८६॥

इति इन्द्रियमार्गणा

सामान्य पृथ्वी, अप, तेज, और वायु, तथा पृथ्वी, अप, तेज, वायु, और प्रत्येक वनस्पतिकाय के बादर अपर्याप्त जीव तथा पृथ्वी, अप, तेज, वायु, के सूक्ष्म पर्याप्त अपर्याप्त जीव असंख्यात लोकप्रमाण हैं ॥८७॥ पृथ्वी अप और प्रत्येक वनस्पति के बादर पर्याप्त जीव असंख्यात हैं ॥८८॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥८९॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥९०॥ बादर तेजस्कायिक पर्याप्त जीव असंख्यात हैं। यह असंख्यातरूप प्रमाण असंख्यात आवलियों के वर्गरूप है जो आवली के घन के भीतर आता है ॥९१॥ बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव असंख्यात हैं ॥९२॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥९३॥ क्षेत्र की अपेक्षा असंख्यात जग

प्रतरप्रमाण है, जो असंख्यात जगप्रतरप्रमाण लोक के संख्यातवें भाग है ॥९४॥ वनस्पतिकाय और निगोद बादर सूक्ष्म के पर्याप्त अपर्याप्त जीव अनन्त है ॥९५॥ काल की अपेक्षा अनन्तानन्त अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे नहीं होते है ॥९६॥ क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त लोक प्रमाण हैं ॥९७॥ सामान्य त्रसकायिक और त्रसकायिकपर्याप्तों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात है ॥९८॥ काल की अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥९९॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से और सूच्यंगुल के संख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगप्रतर पूरा होता है ॥१००॥ सासादन से लेकर अयोगि-केवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान है ॥१०१॥ त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवों का प्रमाण असंख्यात है ॥१०२॥

इति कायमार्गणा

योगमार्गणा से सब मनोयोगियों और तीन वचनयोगियों में मिथ्यादृष्टिजीव असंख्यात है ॥१०३॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में, पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥१०४॥ प्रमत्त से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में संख्यात है ॥१०५॥ सामान्य वचनयोगियों और अनुभय वचनयोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात है ॥१०६॥ कालकी अपेक्षा असंख्याता-

मरयात अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूर होते हैं ॥१०७॥ क्षेत्र की अपेक्षा अगुल के सख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभागसे जगमतर पूरा होता है ॥१०८॥ सासादन आदि अप्रमत्त गुणस्थानवर्ती सासादन आदि मनोयोगराशि के सामान है ॥१०९॥ सामान्य काययोगियों म और औदारिक काययोगियों मे मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य कथन के समान है ॥११०॥ सासादन से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थानतक मनोयोगियों के समान हैं ॥१११॥ औदारिक मिश्रकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥११२॥ सासादन सामान्य कथन के समान हैं ॥११३॥ असयत और सयोगिकेवली सख्यात हैं ॥११४॥ वैक्रियक काययोगियों मे मिथ्यादृष्टि जीव देवों से सख्यातवें भाग कम हैं ॥११५॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत वैक्रियक काययोगी जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥११६॥ वैक्रियकमिश्र काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव देवों से सख्यातवें भाग हैं ॥११७॥ सासादन और असंयत सामान्य कथन के समान हैं ॥११८॥ आहारककाययोगियों म प्रमत्तसयत जीव चौवन हैं ॥११९॥ आहारकमिश्र काययोगियों में प्रमत्तसंयत जीव सख्यात हैं ॥१२०॥ कार्माणकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सामान्य कथन के समान है ॥१२१॥ सासादन और असयत कार्माणकाययोगी जीव पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥१२२॥ सयोगीकेवली कार्माणकाययोगी जीव सख्यात है ॥१२३॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्रीवेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥१२४॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥१२५॥ प्रमत्त से लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक के जीव संख्यात हैं ॥१२६॥ पुरुषवेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥१२७॥ सासादन से लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक तक के जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१२८॥ नपुंसकवेदियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक सामान्य कथन के समान हैं ॥१२९॥ प्रमत्त से लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक के जीव संख्यात हैं ॥१३०॥ अपगतवेदियों में तीन गुणस्थानवर्ती उपशमक जीव प्रवेश से एक, दो या तीन और उत्कृष्टरूप से चौवन हैं ॥१३१॥ काल की अपेक्षा उपशामक संख्यात हैं ॥१३२॥ तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक और अयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१३३॥ सयोगकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१३४॥

इति वेदमार्गणा

कषायमार्गणा से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१३५॥ प्रमत्त से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक

सख्यात हैं ॥१३६॥ इतना विशेष है कि लोभकषायी जीवों में सूक्ष्मसांपरायक उपशमक और क्षपक जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१३७॥ कषायरहित जीवों में उपशान्तकषाय जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१३८॥ क्षीणकषाय और अयोगिकेवली सामान्यकथन के समान हैं ॥१३९॥ सयोग केवली सामान्यकथन के समान हैं ॥१४०॥

इति कषायमार्गणा ॥

ज्ञानमार्गणा से मत्यज्ञानी और श्रुताज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टि और सासादन जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१४१॥ विभंगज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीव देवों से कुछ अधिक हैं ॥१४२॥ सासादन जीव पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं ॥१४३॥ मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी, और अवधिज्ञानी जीवों में असंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानों में जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१४४॥ इतना विशेष है कि अवधिज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानों में जीव सख्यात हैं ॥१४५॥ मनःपर्ययज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक जीव सख्यात हैं ॥१४६॥ केवलज्ञानियों में सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१४७॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयममार्गणा से सामान्य संयमियों में प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक के जीव प्रत्येक गुणस्थान में सख्यात

हैं ॥१४८॥ सामायिक और छेदोपस्थापन जीवों में प्रमत्त से लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में संख्यात हैं ॥१४९॥ परिहार विशुद्धि में प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संख्यात हैं ॥१५०॥ सूक्ष्मसांपराय में सूक्ष्मसांपरायिक उपशमक और क्षपक जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१५१॥ यथाख्यात में ग्यारहवें, बारहवें, तेरहवें, और चौदहवें गुणस्थानवर्ती जीवों का प्रमाण सामान्य कथन के समान है ॥१५२॥ संयतासंयत जीव पल्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥१५३॥ असंयतों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१५४॥

इति संयममार्गणा

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शनी जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव असंख्यात हैं ॥१५५॥ कालकी अपेक्षा असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे होते हैं ॥१५६॥ क्षेत्र की अपेक्षा सूच्यंगुल के संख्यातवें भाग के वर्गरूप प्रतिभाग से जगत्प्रतर पूरा होता है ॥१५७॥ सासादन से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान हैं ॥१५८॥ अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१५९॥ अवधिदर्शनी जीव अवधिज्ञानियों के समान हैं ॥१६०॥ केवलदर्शनी जीव

केवलज्ञानियों के समान है ॥१६१॥

इति दर्शनमार्गणा

लेश्यामार्गणा में कृष्ण, नील और कापोत लेश्यावाले जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान है ॥१६२॥ तेजोलेश्या वाले जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव ज्योतिषीदेवों से कुछ अधिक हैं ॥१६३॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥१६४॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संख्यात हैं ॥१६५॥ पद्मलेश्यावालों में मिथ्यादृष्टि जीव संज्ञी पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमती जीवों के संख्यातवें भाग हैं ॥१६६॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में पल्य के असंख्यातवें भाग हैं ॥१६७॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संख्यात हैं ॥१६८॥ शुक्ललेश्यावालों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण हैं। इन जीवों के द्वारा अन्तर्मुहूर्त काल से पल्य पूरा होता है ॥१६९॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीव संख्यात हैं ॥१७०॥ अपूर्वकरण से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान हैं ॥१७१॥

इति लेश्यामार्गणा

भव्यमार्गणा से भव्य मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली

गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव सामान्य कथन के समान हैं १७२॥ अभव्य जीव अनन्त हैं ॥१७३॥

इति भव्यमार्गणा

सम्यक्त्वमार्गणा से सम्यग्दृष्टियों में असयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७४॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में असयत जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७५॥ सयतासयत से लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तक सख्यात हैं ॥१७६॥ चारों क्षपक और अयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७७॥ सयोगिकेवली जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७८॥ वेदक में असयत से लेकर अप्रमत्तसयत गुणस्थान तक जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१७९॥ उपशम में असयत और सयतासयत जीव सामान्य कथन के समान हैं ॥१८०॥ प्रमत्त से लेकर उपशान्त कषाय गुणस्थान तक जीव सख्यात हैं ॥१८१॥ सासादनसम्यग्दृष्टि जीव पल्य के असख्यातवें भाग हैं ॥१८२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव पल्य के असख्यातवें भाग हैं ॥१८३॥ मिथ्यादृष्टि जीव अनन्तानन्त हैं ॥१८४॥

इति सम्यक्त्व मार्गणा

सैनीमार्गणा से सैनियों में मिथ्यादृष्टि जीव असख्यात हैं ॥१८५॥ सासादन से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में सामान्य कथन के समान हैं ॥१८६॥ असैनीजीव अनन्त हैं ॥१८७॥ काल की अपेक्षा अनन्तानन्त

अपसर्पिणियों और उत्सर्पिणियों के द्वारा पूरे नहीं होते हैं ॥१८८॥ क्षेत्र की अपेक्षा अनन्तानन्त लोक प्रमाण हैं ॥१८९॥

॥८८॥ इति संज्ञीमार्गणा ॥

आहारमार्गणा में आहारकों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोगिकेवली-गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान में जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१९०॥ अनाहारकों में मिथ्यादृष्टि, सासादनसम्यग्दृष्टि असंयतसम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली जीवों का प्रमाण कार्मणकाययोगियों के समान हैं ॥१९१॥ अयोगिकेवली जीव सामान्यकथन के समान हैं ॥१९२॥

इति आहारमार्गणा

* इति संख्याधिकार *

## अथ-क्षेत्राधिकार

भेदकथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा दो प्रकार का है ॥१॥ सामान्यकथन से मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥२॥ सासादन से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान तक के जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३॥ सयोगिकेवली जीव लोक के असंख्यातवें भाग में, अथवा लोक के असंख्यात बहुभागों में, अथवा सर्वलोक में रहते हैं ॥४॥

इति सामान्यकथन

विशेष गति मार्गणा से नरकगति मे, सामान्य नारकियों मे मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवें भाग मे रहते है ॥५॥ इसी प्रकार सातों पृथिवियों के नारकीजीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६॥ तिर्यंच गति में सामान्य, तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥७॥ सासादन से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक के जीव लोक के असख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥८॥ सामान्य पचेन्द्रिय तिर्यंच पचेन्द्रिय पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यंचयोनिमती जीवों मे मिथ्यादृष्टि से लेकर सयतासयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥९॥ पचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव लोक के असख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥१०॥ मनुष्य गति मे सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के असख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥११॥ सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान ॥१२॥ लब्ध्य पर्याप्त मनुष्य लोक के असख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥१३॥ देवगति मे सामान्य देव मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के देव लोक के असख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥१४॥ भवनवासी से लेकर ग्रैवेयक तक के देवों का क्षेत्र इसी प्रकार होता है ॥१५॥ अनुदिश से लेकर सर्वार्थसिद्धिविमान तक के असयतदेव लोक के असख्यातवें

भाग में रहते हैं ॥१७॥

इति गतिमार्गणा

सर्वसंसार के एकेन्द्रिय जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥१७॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीव और उन्हीं के पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥१८॥ सामान्य पचेंन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्त जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थान के जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥१९॥ सयोगिकेवलियों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥२०॥ लब्ध्यपर्याप्त पचेन्द्रिय जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२१॥

इति इन्द्रियमार्गणा

सामान्य पृथ्वी, अप, अग्नि वायु के जीव और बादर, पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति के अपर्याप्त जीव और सूक्ष्म पृथ्वी, अप, तेज, वायु के पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥२२॥ पृथ्वी, अप, तेज, और प्रत्येक वनस्पति के बादर पर्याप्त जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२३॥ बादर वायुकायिक पर्याप्त जीव लोक के संख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२४॥ वनस्पतिकाय और निगोद बादर सूक्ष्म के पर्याप्त और अपर्याप्त जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥२५॥ सामान्य त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक

गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२६॥ सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान हैं ॥२७॥ त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२८॥

इति कायमार्गणा

योग मार्गणा की अपेक्षा सर्वमनोयोगी और सर्व वचनयोगियों मे मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥२९॥ काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का क्षेत्र सर्वलोक है ॥३०॥ सासादन से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३१॥ सयोग केवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥३२॥ औदारिक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का क्षेत्र सर्वलोक है ॥३३॥ सासादन से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३४॥ औदारिक मिश्रकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते है ॥३५॥ सासादन, असयत और सयोगिकेवली जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३६॥ वैक्रियिक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक के जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३७॥ वैक्रियकमिश्र काययोगियों में मिथ्यादृष्टि, सासादन और असयत गुणस्थानवर्ती

जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३८॥ आहारकाययोगियों में और आहारमिश्रकाययोगियों में प्रमत्तसंयत गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥३९॥ कार्माणकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥४०॥ सासादन और असंयत जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥४१॥ सयोगिकेवली लोक के असंख्यात बहुभागों में और सर्वलोक में रहते हैं ॥४२॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा की अपेक्षा स्त्रीवेदी और पुरुषवेदियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥४३॥ नपुंसकवेदी मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थानतक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का क्षेत्र सामान्यकथन के समान है ॥४४॥ अपगतवेदी जीवों में अनिवृत्तिकरण अवेदभाग से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥४५॥ सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्यकथन के समान है ॥४६॥

इति वेदमार्गणा

कषायमार्गणा से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का क्षेत्र सर्वलोक है ॥४७॥ सासादन से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग

में रहते हैं ॥४८॥ विशेष बात यह है कि लोभकषायी जीवों में सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमक और क्षपक जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥४९॥ अकषायी जीवों में उपशान्तकषाय आदि चारों गुणस्थानों का क्षेत्र सामान्यकथन के समान है ॥५०॥

इति कषायमार्गणा

ज्ञानमार्गणा से कुमति और कुश्रुतज्ञानियों में मिथ्यादृष्टियों का क्षेत्र सर्व लोक है ॥५१॥ सासादन का क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग है ॥५२॥ विभंगज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि और सासादन गुणस्थानवर्ती जीव लोकके असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥५३॥ मतिश्रुत और अवधिज्ञानियों में असंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥५४॥ मनःपर्ययज्ञानियों में प्रमत्तसंयत गुणस्थान से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥५५॥ केवल ज्ञानियों मे सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥५६॥ अयोगिकेवली लोक के असंख्यातवें भाग रहते हैं ॥५७॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयम मार्गणा से सामान्य संयत प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥५८॥ सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥५९॥ सामायिक और छेदो-

पम्यायना प्रमत्तसयत गुणस्थान से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असग्व्यातवें भाग में रहते हैं ॥६०॥ परिहार विशुद्धि मे प्रमत्त और अप्रमत्त जीव लोक के असख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥६१॥ सूक्ष्मसापरायिक में सूक्ष्म सापरायिक उपशमक क्षपक जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६२॥ यथाख्यात मे उपशान्तकषाय से लेकर अयोगि केवली गुणस्थान तक चारों गुणस्थान वाले सामान्यवचन के समान हैं ॥६३॥ सयतासयत जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६४॥ असयतों में मिथ्यादृष्टि का क्षेत्र सर्व लोक है ॥६५॥ सासादन सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६६॥

इति सयममार्गणा

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शनियों मे मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीण कषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥६७॥ अचक्षुदर्शनियों मे मिथ्यादृष्टि जीव सर्व लोक मे रहते हैं ॥६८॥ सासादन से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं॥६९॥ अवधिदर्शनी जीवों का क्षेत्र अवधिज्ञानियों के समान है ॥७०॥ केवलदर्शनी जीवों का क्षेत्र लोक का असख्यातवां भाग, लोक का असख्यात बहुभाग और सर्व लोक है ॥७१॥

इति दर्शनमार्गणा

लेश्यामार्गणा से कृष्ण, नील और कापोत लेश्या वाले

जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक मे रहते हैं ॥७२॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत जीव लोक के असंख्यातवें भाग मे रहते हैं ॥७३॥ तेजोलेश्यावाले और पद्मलेश्यावाले जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥७४॥ शुक्ललेश्यावाले जीवों मे मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥७५॥ सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७६॥

इति लेश्यामार्गणा

भव्यमार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७७॥ अभव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव सर्वलोक मे रहते हैं ॥७८॥

इति भव्यमार्गणा

सम्यक्त्वमार्गणा से सामान्य सम्यग्दृष्टि और क्षायिक सम्यग्दृष्टि जीवों में असयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान हैं ॥७९॥ सयोगिकेवली का क्षेत्र सामान्यकथन के समान है ॥८०॥ वेदक-सम्यग्दृष्टियों में असयत से लेकर अप्रमत्त सयतगुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असख्यातवें भाग में रहते हैं ॥८१॥ उपशमसम्यग्दृष्टि जीवों में असयत से लेकर

उपशान्तकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीव लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥८२॥ सासादन जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥८३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥८४॥ मिथ्यादृष्टि जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥८५॥

इति सम्यक्त्वमार्गणा

संज्ञीमार्गणा से संज्ञी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥८६॥ असंज्ञी जीव सर्वलोक में रहते हैं ॥८७॥

इति संज्ञीमार्गणा

आहारमार्गणा से आहारक जीवों में मिथ्यादृष्टियों का क्षेत्र सर्व लोक है ॥८८॥ सासादन से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥८९॥ अनाहारकों में मिथ्यादृष्टि जीवों का क्षेत्र सर्व लोक है ॥९०॥ सासादन, असंयत और अयोगिकेवली लोक के असंख्यातवें भाग में रहते हैं ॥९१॥ सयोगिकेवली लोक के असंख्यात बहुभागों में और सर्व लोक में रहते हैं ॥९२॥

इति आहारमार्गणा

* इति क्षेत्राधिकार *

## अथ स्पर्शनाधिकार

स्पर्शन कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा दो प्रकार का है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥२॥ सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥३॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग तथा कुछ कम बारह बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥५॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥६॥ संयतासंयत जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥७॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥८॥ प्रमत्त संयत गुणस्थान से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥९॥ सयोगिकेवली भगवन्तों ने लोक का असंख्यातवां भाग असंख्यात बहु भाग और सर्व लोक स्पर्श किया है ॥१०॥

इति सामान्यकथन

विशेष गतिमार्गणा से नरक गति में मिथ्यादृष्टि सामान्य नारक जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥११॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१२॥ सासादन नारकियों ने लोक का

असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१३॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम पाच बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है॥१५॥ प्रथम पृथ्वी में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर असयत जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१६॥ द्वितीय पृथ्वी से लेकर छठी पृथ्वी तक प्रत्येक पृथ्वी के मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१७॥ अतीत काल की अपेक्षा चौदह भागों म से कुछ कम एक दो तीन चार और पाच भाग स्पर्श किये है ॥१८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत नारकी जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है,॥१६॥ सातवीं पृथ्वी मे मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥२०॥ अतीत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२१॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥२२॥ तिर्यंच गति में मिथ्यादृष्टि जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥२३॥ सासादन जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥२४॥ भूत और भविष्य काल की अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किये है ॥२५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि तिर्यंचों न लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥२६॥ असयत और सयतासयत गुणस्थानवर्ती तिर्यंचों

ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥२७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥२८॥ सामान्य पचेन्द्रिय तिर्यंच, पचेन्द्रिय तिर्यंच, पर्याप्त और योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥२९॥ अतीत और अनागत काल मे सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३०॥ शेष तिर्यंच गति के जीवों का स्पर्श क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥३१॥ पचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्त जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥३२॥ अतीत और अनागत काल में सर्व लोक स्पर्श किया है ॥३३॥ मनुष्य गति मे सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यनियों मे मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥३४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३५॥ सासादन जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥३६॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥३७॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥३८॥ सयोगिकेवली जिनोंने लोक का असख्यातवां भाग असख्यात बहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥३९॥ लब्ध्य पर्याप्त मनुष्यों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥४०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व

लोक स्पर्श किया है ॥४१॥ देवगति में सामान्य मिथ्या दृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥४२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और कुछ कम नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥४३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥४४॥ अतीत और अनागत काल में कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥४५॥ भवनवासी व्यन्तर और ज्योतिष्क देवों में मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥४६॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा लोक नाली के चौदह भागों में से कुछ कम साढ़े तीन भाग, आठ भाग और नौ भाग स्पर्श किये हैं ॥४७॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥४८॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम साढ़े तीन भाग और कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥४९॥ सौधर्म और ईशान कल्पवासी देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य देवों के समान है ॥५०॥ सनत्कुमार से लेकर सहस्रार तक के देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥५१॥ अतीत और अनागत काल में कुछ कम आठ बटे

चौदह भाग स्पर्श किया है ॥५२॥ आनत से लेकर अच्युत तक के देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥५३॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम छह घटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥५४॥ नव-ग्रैवेयक विमानवासी देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती देवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥५५॥ नव अनुदिश से लेकर सर्वार्थसिद्धि तक विमानवासी देवों में असयत सम्यग्दृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥५६॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रिय मार्गणा से सर्व प्रकार के एकेन्द्रिय जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥५७॥ सर्व प्रकार के द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥५८॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥५९॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥६०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ घटे चौदह भाग और सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६१॥ सासादन से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य

कथन के समान है ॥६३॥ सयोगिकेवली जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ लब्धपर्याप्त पचेन्द्रिय जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥६४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६५॥

इति इन्द्रियमार्गणा

काय-मार्गणा से सामान्य पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु कायिक जीव तथा बादर पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति कायिक प्रत्येक शरीर जीव तथा इन्हीं पांचों के बादर अपर्याप्त जीव, सूक्ष्म पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, कायिक और इन्हीं सूक्ष्म जीवों के पर्याप्त और अपर्याप्त जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥६६॥ बादर, पृथ्वी, अप, तेज और वनस्पति कायिक प्रत्येक शरीर पर्याप्त जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥६७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्वलोक स्पर्श किया है ॥६८॥ बादर वायुकायिक पर्याप्त जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥६९॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥७०॥ वनस्पति कायिक जीव और निगोद जीव बादर, सूक्ष्म के पर्याप्त, अपर्याप्त जीवों ने सर्व लोक स्पर्श किया है ॥७१॥ सामान्य त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्त जीवों में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य

न्य कथन के समान है ॥७२॥ त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्त जीवों का स्पर्शन क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग है ॥७३॥

इति कायमार्गणा

योग मार्गणा में सर्व मनोयोगी और सर्व वचनयोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है॥७४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोक स्पर्श किया है ॥७५॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७६॥ प्रमत्त संयत से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥७७॥ काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सर्व लोक है ॥७८॥ सासादन से लेकर क्षीण कषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥७९॥ सयोगिकेवली का स्पर्शन क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग, असंख्यात बहुभाग और सर्वलोक है ॥८०॥ औदारिक काययोगी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का स्पर्शन क्षेत्र सर्व लोक है ॥८१॥ सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥८२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम सात बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥८३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥८४॥ असंयत और संयतासंयत जीवों ने लोक का

असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥८५॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥८६॥ प्रमत्त सयत से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया ॥८७॥ औदारिक, मिश्रकाययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सर्व लोक है ॥८८॥ सासादन असयत और सयोगिकेवली जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥८९॥ वैक्रियक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥९०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह और कुछ कम तेरह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥९१॥ सासादन जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥९२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असयत जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥९३॥ वैक्रियक मिश्रकाययोगी जीवों में मिथ्यादृष्टि सासादन और असयत सम्यग्दृष्टि जीवों ने लोक का असख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥९४॥ आहारक काययोगी और आहारक मिश्रकाययोगी जीवों में प्रमत्त सयतों ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥९५॥ कार्मण काययोगी जीवों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥९६॥ सासादन ने लोक का असख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥९७॥ तीनों कालों की अपेक्षा कुछ कम ग्यारह बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥९८॥ असयत जीवों ने

लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥९९॥ तीनों कालों की अपेक्षा से कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१००॥ सयोगिकेवलियों ने लोक का असंख्यातबहुभाग और सर्वलोक स्पर्श किया है ॥१०१॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्री वेदी और पुरुष वेदी जीवों में मिथ्यादृष्टियों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१०२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग तथा सर्व लोक स्पर्श किया है ॥१०३॥ सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१०४॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह और नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि तथा असंयत जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१०६॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०७॥ संयतासंयत जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१०८॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा से कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१०९॥ प्रमत्त संयत से लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥११०॥ नपुंसक वेदी जीवों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सर्व लोक है ॥१११॥

सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥११२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥११३॥ सम्यग्मिथ्या-दृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥११४॥ असंयत और संयतासंयत जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥११५॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥११६॥ प्रमत्त संयत से लेकर अनिवृत्ति करण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥११७॥ अपगत वेदी जीवों में अनिवृत्ति करण से लेकर अयोगिकेवली गुण-स्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥११८॥ सयोगिकेवली जिनों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥११९॥

॥ इति वेदमार्गणा [illegible] ॥

कषाय मार्गणा से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्ति करण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२०॥ विशेष बात यह है कि लोभ कषायी जीवों में सूक्ष्म सांपराय गुणस्थानवर्ती उपशमक और क्षपक जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२१॥ अकषायी जीवों में उपशान्त कषाय आदि चार

गुणस्थान वालों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२२॥

इति कषायमार्गणा

ज्ञानमार्गणा से कुमति और कुश्रुत अज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२३॥ सासादन जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२४॥ विभंग ज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१२५॥ अतीत और अनागत कालों की अपेक्षा आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोक स्पर्श किया है ॥१२६॥ सासादन जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२७॥ मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधज्ञानियों में असंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२८॥ मनःपर्यय ज्ञानियों में प्रमत्त से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१२९॥ केवलज्ञानियों में सयोगिकेवली जिनों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३०॥ अयोगिकेवली जिनों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३१॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयम मार्गणा से संयतों में प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का

क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३२॥ समयवर्ती म सयोगिकेवली का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३३॥ सामायिक और छेदोपस्थापना में प्रमत्त से लेकर अनिवृत्ति करण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३४॥ परिहार विशुद्धि में प्रमत्त और अप्रमत्त ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१३५॥ सूक्ष्म साम्परायिक, सूक्ष्म साम्परायिक क्षपक जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३६॥ यथाख्यात में चारों गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३७॥ संयतासंयत जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३८॥ असंयत जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१३९॥

इति संयममार्गणा

दर्शन मार्गणा से चक्षु दर्शनियों में मिथ्यादृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१४०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग और सर्व लोक स्पर्श किया है ॥१४१॥ सासादन से लेकर क्षीण कषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१४२॥ अचक्षु दर्शनियों में मिथ्यादृष्टि गुणस्थान से लेकर क्षीण कषाय

गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१४३॥ अवधिदर्शनी जीवों का स्पर्शन क्षेत्र अवधि ज्ञानियों के समान है ॥१४४॥ केवल दर्शनी जीवों का स्पर्शन क्षेत्र केवल ज्ञानियों के समान है ॥१४५॥

इति दर्शनमार्गणा

लेश्यामार्गणा से कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या वाले मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१४६॥ सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१४७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम पांच बटे चौदह, चार बटे चौदह और दो बटे चौदह भाग स्पर्श किये हैं ॥१४८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१४९॥ तेजो लेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि और सासादन जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१५०॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह और कुछ कम नौ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१५१॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१५२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१५३॥ संयतासंयत जीवों ने लोक का असंख्यातवां [illegible]

अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम डेढ़ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१५५॥ प्रमत्त और अप्रमत्त जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१५६॥ पद्म लेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है १५७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१५८॥ संयतासंयत जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१५९॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम पांच बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१६०॥ प्रमत्त और अप्रमत्त संयत जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६१॥ शुक्लेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवां भाग स्पर्श किया है ॥१६२॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम छह बटे चौदह भाग स्पर्श किया है ॥१६३॥ प्रमत्त से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है १६४॥

इति लेश्यामार्गणा

भव्य मार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६५॥ अभव्य जीवों ने

भाग लोक स्पर्श किया है ॥१६६॥

इति भव्यमार्गणा

सम्यक्त्व मार्गणा से सम्यग्दृष्टियों में असंयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६७॥ क्षायिकों में असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१६८॥ संयतासंयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१६९॥ सयोगिकेवली जिनों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७०॥ वेदक सम्यग्दृष्टि जीवों में असंयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७१॥ औपशमिक सम्यग्दृष्टियों में असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७२॥ संयतासंयत से लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१७३॥ सासादन जीवों का क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७५॥ मिथ्यादृष्टि जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७६॥

इति सम्यक्त्वमार्गणा

सैनी मार्गणा से सैनी जीवों में मिथ्यादृष्टियों ने लोक का

असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है १७७॥ अतीत और अनागत काल की अपेक्षा कुछ कम आठ बट चौदह भाग और सर्व लोक स्पर्श किया है ॥ ॥१७८॥ सासादन से लेकर-क्षीण कषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१७९॥ असैनी जीवों ने सर्वलोक स्पर्श किया है ॥१८०॥

इति सैनामार्गणा

आहार मार्गणा से आहारक जीवों मे मिथ्यादृष्टियों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१८१॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र सामान्य कथन के समान है ॥१८२॥ प्रमत्त से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१८३॥ अनाहारक जीवों में संभवित गुणस्थानवर्ती जीवों का स्पर्शन क्षेत्र कार्माण काययोगियों के क्षेत्र के समान है ॥१८४॥ विशेष बात यह है कि अयोगिकेवलियों ने लोक का असंख्यातवा भाग स्पर्श किया है ॥१८५॥

इति आहारमार्गणा

इति स्पर्शनाधिकार

# अथ कालाधिकार

काल कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार का है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२॥ एक जीव की अपेक्षा काल तीन प्रकार है अनादि-अनन्त, अनादि-सान्त और सादि-सान्त। इनमें सादि-सान्त का जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्धपुद्गलपरिवर्तन है ॥४॥ सासादन जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय तक होते हैं ॥५॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥७॥ उत्कृष्ट काल छह आवली है ॥८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त तक होते हैं ॥९॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥१०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥११॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२॥ असंयतसम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१४॥ उत्कृष्ट काल कुछ अधिक तेतीस सागर है ॥१५॥ संयतासंयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१७॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्व कोटि वर्ष प्रमाण है ॥१८॥ प्रमत्त और अप्रमत्त संयत जीव नाना

जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥१९॥ एक जीव की
अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥२०॥ उत्कृष्ट काल अ
मुहूर्त है ॥२१॥ चारों उपशमक जीव नाना जीवों की अपेक्षा
जघन्य से एक समय तक होते हैं ॥२२॥ उत्कृष्ट काल
अन्तर्मुहूर्त है २३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल
एक समय है ॥२४॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५॥
चारों क्षपक और अयोगिकेवली जीव नाना जीवों की
अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२६॥ उत्कृष्ट काल
अन्तर्मुहूर्त है ॥२७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्त
मुहूर्त है ॥२८॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२९॥ सयोगि
केवली जिन नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३०
एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३१॥ उत्कृ
काल कुछ कम पूर्व कोटी है ॥३२॥

इति सामान्य कथन

विशेष गति मार्गणा से सामान्य नारकियों में मिथ्यादृष्टि ज
नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३३॥ एक जीव की अपे
जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३४॥ उत्कृष्ट काल तेतीस सा
है ॥३५॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का एक अ
नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल सामान्य क
के समान है ॥३६॥ असंयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपे
सर्वकाल होते हैं ॥३७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य
अन्तर्मुहूर्त है ॥३८॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस स

है ॥३९॥ प्रथम पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥४०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥४१॥ उत्कृष्ट काल क्रमशः एक, तीन, सात, दस, सत्तरह, बाईस और तेतीस सागर है ॥४२॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना और एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल सामान्य कथन के समान है ॥४३॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥४४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥४५॥ उत्कृष्ट काल क्रमशः कुछ कम एक, तीन, सात, दस, सत्तरह, बाईस और तेतीस सागर है ॥४६॥ तिर्यंच गति में सामान्य तिर्यंचों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥४७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥४८॥ उत्कृष्ट काल असख्यात पुद्गल परिवर्तन है ॥४९॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥५०॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥५१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥५२॥ उत्कृष्ट काल तीन पल्य है ॥५३॥ सयतासयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥५४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥५५॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम पूर्व कोटि वर्ष है ॥५६॥ सामान्य पंचेन्द्रिय तिर्यंच, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त, और पंचेन्द्रिय तिर्यंच

योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥५७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥५८॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥५६॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥६०॥ असंयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥६१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥६२॥ उत्कृष्ट काल क्रम से तीन, तीन और कुछ कम तीन पल्य है ॥६३॥ संयतासंयत का काल सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ पंचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक तिर्यंच नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥६५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥६६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ॥६७॥ मनुष्य गति में सामान्य मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥६८॥ जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥६९॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटि पृथक्त्व वर्ष से अधिक तीन पल्य है ॥७०॥ सासादन जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय होते हैं ॥७१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥७३॥ उत्कृष्ट काल छह आवली है ॥७४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त ॥७६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥७७॥ उत्कृष्ट काल अन्त

मुहूर्त है ॥७८॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥७९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥८०॥ उत्कृष्ट काल क्रम से तीन, तीन से अधिक और तीन पल्य से कुछ कम है ॥८१॥ सयतासयत से लेकर अयोगिकेवली तक उत्कृष्ट या जघन्य काल सामान्य कथन के समान है ॥८२॥ लब्ध्यपर्याप्तक मनुष्यों म नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण काल तक होते हैं ॥८३॥ उत्कृष्ट काल पल्य का असख्यातवा भाग है ॥८४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥८५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥८६॥ देवगति म सामान्य देवों मे मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥८७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥८८॥ उत्कृष्ट काल इकतीस सागर है ॥८९॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि का काल सामान्य कथन के समान है ॥९०॥ असयत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥९१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥९२॥ उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है ॥९३॥ भवनवासी देवों से लेकर सहस्रार कल्प वासी देवों तक मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥९४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥९५॥ उत्कृष्ट काल क्रम से एक सागर एक पल्य, दो, सात, दस, चौदह, सोलह और

सागर से कुछ अधिक है ॥९६॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥९७॥ आनत-प्राणत से लेकर नव ग्रैवेयक विमान-वासी देवों में मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि देव, नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥९८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥९९॥ उत्कृष्ट काल क्रम से बीस, बाईस, तेईस, चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस सागर है ॥१००॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥१०१॥ नव अनुदिश विमान वासी देवों तथा अनुत्तर नामक विजय, वैजयन्त, जयन्त और अपराजित विमान वासी देवों में असंयत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते हैं ॥१०२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल कुछ अधिक इकतीस सागर और चार अनुत्तर विमानों में कुछ अधिक बत्तीस सागर है ॥१०३॥ उत्कृष्ट काल क्रम से बत्तीस और तेतीस सागर है ॥१०४॥ सर्वार्थसिद्धि विमानवासी देवों में असंयत सम्यग्दृष्टि देव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१०५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य तथा उत्कृष्ट काल तेतीस सागर है ॥१०६॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रिय मार्गणा से सामान्य एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की अपेक्षा सब काल होते हैं ॥१०७॥ एक जीव की अपेक्षा

जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०८॥ उत्कृष्ट काल अनन्त कालात्मक असंख्यात पुद्गल परिवर्तन है ॥१०९॥ सामान्य बादर एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥११०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१११॥ उत्कृष्ट काल अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी प्रमाण है ॥११२॥ बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥११३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥११४॥ उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष है ॥११५॥ बादर एकेन्द्रिय लब्ध्य पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥११६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥११७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥११८॥ सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रिय जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥११९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१२०॥ उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक के जितने प्रदेश हैं उतने प्रमाण है ॥१२१॥ सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१२२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२४॥ सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्य पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१२५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र

ग्रहण प्रमाण है ॥१२६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१२७॥ सामान्य द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय और उन्हीं के पर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते है ॥१२८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्रमशः क्षुद्र भव ग्रहण और अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ॥१२९॥ उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष है ॥१३०॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्वकाल होते है ॥१३१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१३२॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१३३॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पंचेन्द्रिय पर्याप्तकों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते है ॥१३४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त प्रमाण है ॥१३५॥ उत्कृष्ट काल एक हजार सागर और पूर्व कोटि पृथक्त्व से कुछ अधिक है ॥१३६॥ सासादन से लेकर अयोगि केवली गुणस्थान तक के जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥१३७॥ पचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवों का काल द्वीन्द्रियादि लब्ध्यपर्याप्तक जीवों के काल के समान सर्व कथन है ॥१३८॥

इति इन्द्रियमार्गणा

काय मार्गणा में सामान्य पृथ्वी, जल, तेज और वायु कायिक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते है ॥१३९॥

है ॥१४०॥ उत्कृष्ट काल असंख्यात लोक प्रमाण है ॥१४१॥ सामान्य पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति कायिक के बादर जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१४२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१४३॥ उत्कृष्ट काल कर्म स्थिति प्रमाण है ॥१४४॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति काय के बादर पर्याप्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१४५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१४६॥ उत्कृष्ट काल संख्यात हजार वर्ष है ॥१४७॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक वनस्पति कायिक के बादर लब्ध्यपर्याप्तक जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१४८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१४९॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१५०॥ पृथ्वी, अप, तेज, वायु, वनस्पति और निगोद के सूक्ष्म जीव और उनके ही पर्याप्त तथा अपर्याप्त जीवों का काल सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और अपर्याप्तकों के काल के समान है ॥१५१॥ सामान्य वनस्पति कायिक जीवों का काल एकेन्द्रिय जीवों के काल के समान है ॥१५२॥ सामान्य निगोद जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१५३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१५४॥ उत्कृष्ट काल अढ़ाई पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥१५५॥ बादर निगोद जीवों का काल बादर

पृथ्वी कायिक जीवों के समान है ॥१५६॥ सामान्य त्रस कायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१५७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१५८॥ उत्कृष्ट काल पूर्व कोटी पृथक्त्व से अधिक दो हजार सागर और पूरे दो हजार सागर है ॥१५९॥ सासादन से लेकर अयोगि केवली गुण स्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥१६०॥ त्रसकायिक लब्ध्यपर्याप्तकों का काल द्वीन्द्रियादि लब्ध्यपर्याप्तकों के काल के समान सब कथन है ॥१६१॥

इति कायमार्गणा

योग मार्गणा से सर्व मनोयोगी और सर्व वचन योगी जीवों में मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्यग्दृष्टि, संयतासंयत, प्रमत्त, अप्रमत्त और सयोगि केवली जिन नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१६२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥१६३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६४॥ सासादन का काल सामान्य कथन के समान है ॥१६५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा एक समय होते हैं ॥१६६॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥१६७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥१६८॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६९॥ चारों उपशमक और क्षपक, जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य काल एक समय होता है ॥१७०॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१७१॥ एक जीव की अपेक्षा

एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६२॥ सयोगिकेवली जिन नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय होते हैं ॥१६३॥ उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ॥१६४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल एक समय है ॥१६५॥ वैक्रियक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥१६६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥१६७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥१६८॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥१६९॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल मनोयोगियों के समान है ॥२००॥ वैक्रियक मिश्र काययोगी जीवों में मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त काल तक होते हैं ॥२०१॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥२०२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२०३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२०४॥ सासादन जीवों का काल नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२०५॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥२०६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥२०७॥ उत्कृष्ट काल एक समय कम छह आवली प्रमाण है ॥२०८॥ आहारक काययोगियों में प्रमत्त संयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय होते हैं ॥२०९॥ उत्कृष्ट काल अन्त-

मुहूर्त है ॥२१०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥२११॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१२॥ आहारकमिश्र काययोगियों में प्रमत्त संयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त काल तक होते हैं ॥२१३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२१६॥ कार्मण काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२१७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥२१८॥ उत्कृष्ट काल तीन समय है ॥२१९॥ सासादन और असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय तक होते हैं ॥२२०॥ उत्कृष्ट काल आवली के असंख्यातवें भाग हैं ॥२२१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥२२२॥ उत्कृष्ट काल दो समय है ॥२२३॥ सयोगिकेवली जिन नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से तीन समय तक होते हैं ॥२२४॥ उत्कृष्ट काल संख्यात समय है ॥२२५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट काल तीन समय है ॥२२६॥

इति योगमार्गणा।

वेद मार्गणा से स्त्री वेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२२७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२२८॥ उत्कृष्ट काल पल्य शत पृथक्त्व है ॥२२९॥ सासादन जीवों का काल

सामान्य कथन के समान है ॥२३०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२३१॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२३२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२३३॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम पचपन पल्य है ॥२३४॥ संयता संयत से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक के जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२३५॥ पुरुष वेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२३६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२३७॥ उत्कृष्ट काल सागर शत पृथक्त्व है ॥२३८॥ सासादन से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२३९॥ नपुंसक वेदियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२४०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२४१॥ उत्कृष्ट काल अनन्त कालात्मक असंख्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥२४२॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४४॥ असयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२४५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२४६॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम तेतीस सागर है ॥२४७ संयता संयत से लेकर अनिवृत्ति करण गुणस्थान तक क

काल सामान्य कथन के समान है ॥२४८॥ अपगत वेदी जीवों में अनिवृत्तिकरण के अवेद भाग से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४९॥

इति वेदमार्गणा

कषाय मार्गणा से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक का काल, मनोयोगियों के समान है ॥२५०॥ क्रोध, मान और माया इन तीनों कषायों की अपेक्षा आठवें और नवें गुणस्थानवर्ती और लोभ कषाय की अपेक्षा आठवें, नवें और दशवें गुणस्थानवर्ती उपशमक जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय तक होते हैं ॥२५१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥२५३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५४॥ अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण ये दो गुणस्थानवर्ती क्षपक तथा अपूर्वकरण अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्म सांपराय ये तीन गुणस्थानवर्ती क्षपक नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त तक होते हैं ॥२५५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२५८॥ अकषायी जीवों में अन्तिम चतुर्गुणस्थानी जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२५९॥

इति कषायमार्गणा

ज्ञान मार्गणा से कुमति और कुश्रुत ज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६०॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६१॥ विभंगज्ञानियों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२६२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२६३॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम तैतीस सागर है ॥२६४॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६५॥ मतिश्रुत और अवधिज्ञानी जीवों में असंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६६॥ मनःपर्यय ज्ञानियों में प्रमत्त संयत से लेकर क्षीण कषाय गुणस्थान तक जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६७॥ केवल ज्ञानियों में सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६८॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयम मार्गणा से सामान्य संयतों में प्रमत्त संयत से लेकर अयोगिकेवली तक जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२६९॥ सामायिक और छेदोपस्थापना में प्रमत्त गुणस्थान से लेकर अनिवृत्तिकरण तक के जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७०॥ परिहारविशुद्धि में प्रमत्त और अप्रमत्त का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७१॥ सूक्ष्म साम्परायिक में उपशमक और क्षपकों का काल सामान्य

कथन के समान है ॥२७२॥ यथा ख्यात में अन्तिम चार गुणस्थान वाले जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७३॥ संयतासंयतों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७४॥ असंयत जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक असंयतों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७५॥

॥इति संयममार्गणा॥

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शनी जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२७६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२७७॥ उत्कृष्ट काल दो हजार सागर है ॥२७८॥ सासादन से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥२७६॥ अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥२८०॥ अवधिदर्शनी जीवों का काल अवधिज्ञानियों के समान है ॥२८१॥ केवल दर्शनी जीवों का काल केवल ज्ञानियों के समान है ॥२८२॥

॥इति दर्शनमार्गणा॥

लेश्या मार्गणा से कृष्ण, नील और कापोत लेश्या वाले जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२८३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२८४॥ उत्कृष्ट काल क्रमश तेतीस सागर, सत्तरह

सागर और सात सागर से कुछ अधिक है ॥२८५॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२८६॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों काल सामान्य कथन के समान है ॥२८७॥ असंयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२८८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२८९॥ उत्कृष्ट काल तेतीस सागर, सत्तरह सागर और सात सागर से कुछ कम है ॥२९०॥ तेज और पद्मलेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२९२॥ उत्कृष्ट काल दो सागर और अठारह सागर से कुछ अधिक है ॥२९३॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२९४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२९५॥ संयतासंयत, प्रमत्त और अप्रमत्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥२९७॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२९८॥ शुक्ल लेश्या में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२९९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३००॥ उत्कृष्ट काल कुछ अधिक इक्तीस सागर है ॥३०१॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥३०२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के समान

दृष्टि जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥३०४॥ संयतासंयत, प्रमत्त और अप्रमत्त जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३०५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥३०६॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३०७॥ चारों उपशामक चारों क्षपक और सयोगिकेवली का काल सामान्य कथन के समान है ॥३०८॥

इति लेश्यामार्गणा

भव्य मार्गणा से भव्य जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३०९॥ एक जीव की अपेक्षा अनादि सान्त और सादि सान्त काल है ॥३१०॥ इस में से सादि सान्त का कथन इस प्रकार है ॥३११॥ जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है॥३१२॥ उत्कृष्ट काल कुछ कम अर्ध पुद्गल परिवर्तन है ॥३१३॥ सासादन से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥३१४॥ अभव्य जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३१५॥ एक जीव की अपेक्षा अनादि और अनन्त काल है ॥३१६॥

इति भव्यमार्गणा

सम्यक्त्व मार्गणा से सामान्य सम्यग्दृष्टि और क्षायक सम्यग्दृष्टियों में असंयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक का काल सामान्यकथन के समान है ॥३१७॥ वेदक सम्यग्दृष्टियों में असंयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक का काल सामान्य-

कथन के समान है ॥३१८॥ उपशम सम्यग्दृष्टि जीवों में असंयत सम्यग्दृष्टि और संयतासंयत जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से अन्तर्मुहूर्त काल तक होते हैं ॥३१९॥ उत्कृष्ट काल पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥३२०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२१॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२२॥ प्रमत्त से लेकर उपशान्त कषाय गुणस्थान के जीव नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय तक होते हैं ॥३२३॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल एक समय है ॥३२५॥ उत्कृष्ट काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३२६॥ सासादन जीवों का काल सामान्य कथन के समान है ॥३२७॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्यकथन के समान है ॥३२८॥ मिथ्यादृष्टि जीवों का काल सामान्यकथन के समान है ॥३२९॥

इति सम्यक्त्व मार्गणा

संज्ञी मार्गणा से संज्ञी जीवों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३३०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥३३१॥ उत्कृष्ट काल सागर शत पृथक्त्व है ॥३३२॥ सासादन से लेकर क्षीण कषाय गुणस्थान तक का काल सामान्य कथन के समान है ॥३३३॥ असंज्ञी जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥३३४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥३३५॥ उत्कृष्ट काल अनन्त काला—

स्क असंख्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥२३६॥

इति संज्ञीमार्गणा

आहार मार्गणा से आहारकों में मिथ्यादृष्टि जीव नाना जीवों की अपेक्षा सर्व काल होते हैं ॥२३७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य काल अन्तर्मुहूर्त है ॥२३८॥ उत्कृष्ट काल अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी है ॥२३९॥ सासादन से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक के आहारकों का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४०॥ अनाहारक जीवों का काल कार्माण काययोगियों के समान है ॥२४१॥ अयोगिकेवली का काल सामान्य कथन के समान है ॥२४२॥

इति आहारमार्गणा

इति कालाधिकार

## अथ अन्तराधिकार

अन्तर कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम दो छयासठ सागर है ॥४॥ सासादन और सम्यग-

मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥५॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्य के असंख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥७॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्ध पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥८॥ असंयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक के प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है निरन्तर है ॥९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१०॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्ध पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥११॥ चारों उपशमकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१२॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व है ॥१३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम अर्ध पुद्गल परिवर्तन काल है ॥१५॥ चारों क्षपक और अयोगि केवली का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१६॥ उत्कृष्ट अन्तर छह मास है ॥१७॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१८॥ सयोगि केवलियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२०॥

इति सामान्य कथन

गति मार्गणा से नरक गति में सामान्य नारकियों में मिथ्या

दृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२२॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है ॥२३॥ सासादन और सम्यग्मिथ्या-दृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२४॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असख्यातवें भाग है ॥२५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर पल्य का असख्यातवा भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥२६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तेतीस सागर है ॥२७॥ प्रथम पृथ्वी से लेकर सातवी पृथ्वी तक के नारकियों मे मिथ्यादृष्टि और असयत-सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्त-र्मुहूर्त है ॥२९॥ उत्कृष्ट अन्तर एक, तीन, सात, दश, सत्तरह बाईस, और तेतीस सागर से कुछ कम है ॥३०॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥३१॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असख्यातवें भाग है ॥३२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमश पल्य का असख्यातवा भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३३॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमश एक, तीन, सात, दश, सत्त-रह, बाईस और तेतीस सागर से कुछ कम है ॥३४॥ तिर्यंचगति में सामान्य तिर्यंचों मे मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर ॥३५॥

एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन पल्य है ॥३७॥ सासादन से लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३८॥ सामान्य पचेन्द्रिय तिर्यंच, पचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में मिथ्या दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥४०॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम तीन पल्य प्रमाण है ॥४१॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥४२॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असंख्यातवें भाग प्रमाण है ॥४३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रम से पल्य के असंख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥४४॥ उत्कृष्ट पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥४५॥ असंयत सम्यग्दृष्टि का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥४६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥४७॥ उत्कृष्ट अन्तर पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥४८॥ संयतासंयत का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥४९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥५०॥ उत्कृष्ट अन्तर पूर्व कोटि पृथक्त्व है ॥५१॥ पचेन्द्रिय तिर्यंच लब्ध्यपर्याप्तकों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥५२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर

छह भव ग्रहण प्रमाण है ॥५३॥ उत्कृष्ट अंतर अनंत काल प्रमाण असंख्यात पुद्गल परिवर्तन है ॥५४॥ यह अंतर गति की अपेक्षा कहा गया है ॥५५॥ गुणस्थान की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट, इन दोनों प्रकार से अंतर नहीं है, निरंतर है ॥५६॥ मनुष्य गति में सामान्य मनुष्य, मनुष्य पर्याप्तक और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥५७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥५८॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तीन पल्य है॥५९॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥६०॥ उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥६१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्रम से पल्य का असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥६२॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि वर्ष पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥६३॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥६४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है ॥६५॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि वर्ष पृथक्त्व से अधिक तीन पल्य है ॥६६॥ संयतासंयतों से लेकर, अप्रमत्त तक नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥६७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है ॥६८॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व है ॥६९॥ चारों उपशमकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥७०॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष - ॥७१॥

एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है ॥७२॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व है ॥७३॥ चारों क्षपक और अयोगि केवलियों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥७४॥ उत्कृष्ट अंतर छह मास और वर्ष पृथक्त्व है ॥७५॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥७६॥ सयोगि केवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥७७॥ मनुष्य लब्ध्य पर्याप्तकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥७८॥ उत्कृष्ट अंतर पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥७९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥८०॥ उत्कृष्ट अंतर अनन्त-कालात्मक असंख्यात पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥८१॥ यह अंतर गति की अपेक्षा कहा है ॥८२॥ गुणस्थान की अपेक्षा तो दोनों प्रकार से भी अंतर नहीं है, निरंतर है ॥८३॥ देव गति में सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥८४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है ॥८५॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम इकतीस सागर है ॥८६॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥८७॥ उत्कृष्ट अंतर पल्य का असंख्यातवां भाग है ॥८८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्रम से पल्य का असंख्यातवां भाग और अंतर्मुहूर्त है ॥८९॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम इक-

तीस सागर है ॥९०॥ भवनवासी, से लेकर सहस्रार तक मिथ्यादृष्टि और असयत सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥९१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर अतर्मुहूर्त है ॥९२॥ उत्कृष्ट अतर क्रम से एक सागर, एक पल्य और कुछ अधिक दो, सात, दश, चौदह, सोलह और अठारह सागर है ॥९३॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का अतर स्वस्थान सामान्य कथन के समान है ॥९४॥ आनत कल्प से लेकर नवग्रैवेयक विमानवासी देवों में मिथ्यादृष्टि और असयत-सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥९५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर-अतर्मुहूर्त-है ॥९६॥ उत्कृष्ट अतर क्रम से कुछ कम बीस, बाईस, तेईस चौबीस, पच्चीस, छब्बीस, सत्ताईस, अट्ठाईस, उनतीस, तीस और इकतीस सागर है ॥९७॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि देवों का अतर स्वस्थान सामान्य कथन के समान है ॥९८॥ अनुदिश को आदि लेकर सर्वार्थ सिद्धि विमान वासी देवों में असयत सम्यग्दृष्टि देवों का अतर नहीं है, निरतर है ॥९९॥ एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥१००॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रिय मार्गणा से सामान्य एकेन्द्रियों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥१०१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०२॥ उत्कृष्ट

अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक दो हजार सागर है ॥१०३॥ सामान्य बादर एकेन्द्रियों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥१०४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०५॥ उत्कृष्ट अंतर असंख्यात लोक प्रमाण है ॥१०६॥ इसी प्रकार से बादर एकेन्द्रियलब्ध्य पर्याप्तक और बादर एकेन्द्रिय पर्याप्तकों का अंतर जानना चाहिये ॥१०७॥ सामान्य सूक्ष्म एकेन्द्रिय, सूक्ष्म एकेन्द्रिय पर्याप्त और सूक्ष्म एकेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तक जीवों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥१०८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥१०९॥ उत्कृष्ट अंतर अङ्गुल के असंख्यातवें भाग असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल प्रमाण है ॥११०॥ द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय चतुरिन्द्रिय और उन्हीं के पर्याप्तक तथा लब्ध्यपर्याप्तक जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१११॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्षुद्र भव ग्रहण प्रमाण है ॥११२॥ उत्कृष्ट अन्तर अनन्त कालात्मक असंख्यात पुद्गल परिवर्तन है ॥११३॥ सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय पर्याप्तकों में मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥११४॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥११५॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥११६॥

एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रम से पल्य के असंख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥११७॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटिपृथक्त्व से अधिक एक हजार सागर है, तथा सागर शत पृथक्त्व है ॥११८॥ असयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥११९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१२०॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक सहस्र सागर और शत पृथक्त्व सागर है ॥१२१॥ चारों उपशामकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१२२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥१२३॥ उत्कृष्ट अंतर पूर्व कोटि पृथक्त्व से अधिक सागर सहस्र और सागरशत पृथक्त्व है ॥१२४॥ चारों क्षपक और अयोगिकेवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥१२५॥ सयोगिकेवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥१२६॥ पचेन्द्रिय लब्ध्यपर्याप्तकों का अन्तर द्वीन्द्रियादि लब्ध्यपर्याप्तकों के समान सर्व कथन है ॥१२७॥ यह गति की अपेक्षा अन्तर कहा है ॥१२८॥ गुणस्थान की अपेक्षा दोनो ही प्रकार से अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥१२९॥

इति इन्द्रियमार्गणा।

कायमार्गणा से पृथ्वी, जल, तेज, वायु, के बादर और सूक्ष्म तथा उन सबके पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥१३०॥ एक जीव

की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्षुद्रभव ग्रहण प्रमाण है ॥१३१॥ उत्कृष्ट अन्तर अनन्तकालात्मक असंख्यात पुद्गल परिवर्तन है ॥१३२॥ वनस्पतिकायिक, निगोद जीव, इनके बादर व सूक्ष्म तथा उन सबके पर्याप्तक और अपर्याप्तक जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१३३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्षुद्रभवग्रहण प्रमाण है ॥१३४॥ उत्कृष्ट अन्तर असंख्यात लोक है ॥१३५॥ बादर वनस्पतिकायिक प्रत्येक शरीर और उनके पर्याप्तक तथा अपर्याप्तक जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१३६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्षुद्रभव ग्रहण प्रमाण है ॥१३७॥ उत्कृष्ट अन्तर ढाई पुद्गल परिवर्तन प्रमाण है ॥१३८॥ सामान्य त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तक जीवों में मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर ओघ के कथन के समान है ॥१३९॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१४०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्योपम के असंख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥१४१॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः पूर्वकोटि पृथक्त्व से अधिक दो हजार सागर और कुछ कम दो हजार सागर है ॥१४२॥ असंयत से लेकर अप्रमत्तसंयत गुणस्थान तक जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१४३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४४॥ उत्कृष्ट अन्तर पूर्वकोटि पृथक्त्व से अधिक

दो सहस्र सागर और कुछ कम दो सहस्र सागर है ॥१४५॥ चारों उपशमकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१४६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१४७॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमशः पूर्वकोटि पृथक्त्व से अधिक दो सहस्र सागर तथा कुछ कम दो सहस्र सागर है ॥१४८॥ चारों क्षपक और अयोगिकेवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥१४९॥ सयोगिकेवली का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥१५०॥ त्रसकायिक अपर्याप्तकों का अंतर द्वीन्द्रियादि अपर्याप्तकों के समान सर्व कथन है ॥१५१॥ यह अंतर कायकी अपेक्षा कहा है। गुणस्थान की अपेक्षा दोनों ही प्रकार से अंतर नहीं है, निरंतर है ॥१५२॥

इति कायमार्गणा

योग मार्गणा से सर्व मनोयोगी, सर्व वचनयोगी, सामान्य काययोगी और औदारिक काययोगियों में, मिथ्यादृष्टि, असंयत सम्यग्दृष्टि संयतासंयत, प्रमत्त, अप्रमत्त और सयोगिकेवलियों का नाना जीवों की और एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५३॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१५४॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य के असंख्यातवें भाग है ॥१५५॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५६॥ चारों उपशमकों का अन्तर

नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१५७॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१५८॥ चारों क्षपकों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥१५९॥ औदारिकमिश्र - काययोगियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों और एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६०॥ सासादन का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥१६१॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६२॥ असंयतसम्यग्दृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१६३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व प्रमाण है ॥१६४॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६५॥ सयोगिकेवली जिनों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१६६॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व है ॥१६७॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१६८॥ वैक्रियककाययोगियों में आदि के चारों गुणस्थानवर्ती जीवों का अन्तर मनोयोगियों के समान है ॥१६९॥ वैक्रियकमिश्र काययोगियों में मिथ्यादृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१७०॥ उत्कृष्ट अन्तर बारह मुहूर्त है ॥१७१॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१७२॥ सासादन और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों का अन्तर औदारिकमिश्र काययोगियों के समान है ॥१७३॥ आहारककाययोगी

और आहारकमिश्रकाययोगियों में ... का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य ... है ॥१८८॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥१८९॥ ... अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१९०॥ ... मिथ्यादृष्टि, सासादन, असयत ... का अन्तर औदारिकमिश्र काय... है ॥१७७॥

इति यो...

... मार्गणा से स्त्रीवेदियों में ... जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा ... ॥१७८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य ... है ॥१७९॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम ... है ॥१८०॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों ... नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य वचन के समान ... एक जीव की अपे... जघन्य अंतर क्रमशः पल्य के असंख्यातवां भाग और ... मुहूर्त है ॥१८२॥ उत्कृष्ट ... और शत ... है ॥१८३॥ असयत से ... गुणस्थान तक ... गुणस्थानवर्ती जीवों का ... की अपेक्षा अंतर ... निरंतर है ॥१८४॥ एक ... की अपेक्षा जघन्य ... मुहूर्त है ॥१८५॥ उत्कृष्ट ... शत पृथक्त्व ... नाना अपूर्वकरण और ... उपशामक ... जीवों की अपेक्षा जघन्य ... उत्कृष्ट अंतर ... के समान है ॥१८... एक जीव की

अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१८८॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य शत पृथक्त्व है ॥१८९॥ अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, क्षपकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१९०॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व है ॥१९१॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१९२॥ पुरुष वेदियों में मिथ्यादृष्टियों का अन्तर सामान्य कथन के समान ॥१९३॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥१९४॥ उत्कृष्ट अन्तर पल्य का असंख्यातवां भाग है ॥१९५॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर क्रमशः पल्य का असंख्यातवां भाग अन्तर्मुहूर्त है ॥१९६॥ उत्कृष्ट अन्तर सागर शत- पृथक्त्व है ॥१९७॥ असंयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥१९८॥ जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥१९९॥ उत्कृष्ट अन्तर सागर शत पृथक्त्व है ॥२००॥ अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, उपशमकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२०१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२०२॥ उत्कृष्ट अन्तर सागर शत पृथक्त्व है ॥२०३॥ अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण क्षपकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२०४॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक एक वर्ष है ॥२०५॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर

है ॥२०६॥ नपुंसक वेदियों में मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥२०७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है ॥२०८॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तेतीस सागर है ॥२०९॥ सासादन से लेकर अनिवृत्तिकरण उपशमक गुणस्थान तक का अतर सामान्य कथन के समान है ॥२१०॥ अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, क्षपकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य एक समय है ॥२११॥ उत्कृष्ट अतर वर्ष पृथक्त्व है ॥२१२॥ एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरंतर है ॥२१३॥ अपगत वेदियों में अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्म सापराय उपशमकों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२१४॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष पृथक्त्व है ॥२१५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२१६॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२१७॥ उपशान्तकषाय वालों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२१८॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष पृथक्त्व है ॥२१९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२२०॥ अनिवृत्तिकरण क्षपक, सूक्ष्मसापराय क्षपक, क्षीणकषायी और अयोगिकेवली जीवों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२२१॥ सयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२२२॥

इति वेदमार्गणा

कषायमार्गणा से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषाइयों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सूक्ष्म साम्पराय उपशमक और क्षपक तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का अंतर मनोयोगियों के समान है ॥२२३॥ अकषायियों में उपशान्त कषाय का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य एक समय है ॥२२४॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष पृथक्त्व है ॥२२५॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२२६॥ अकषायी जीवों में क्षीणकषाय और अयोगिकेवली जिनों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२२७॥ सयोगिकेवली जिनों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२२८॥

ज्ञानमार्गणा

ज्ञानमार्गणा में मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का नाना जीवों की और एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२२९॥ सासादन का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२३०॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२३१॥ मतिज्ञान, श्रुतिज्ञान और अवधिज्ञान वालों में असंयतसम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२३२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२३३॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम पूर्वकोटि है॥२३४॥ संयतासंयतों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२३५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्त-

मुहूर्त है ॥२३६॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अधिक छयासठ सागर है ॥२३७॥ प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२३८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२३९॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अधिक तेतीस सागर है ॥२४०॥ चारों उपशमकों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२४१॥ उत्कृष्ट अतर वर्षपृथक्त्व है ॥२४२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४३॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अधिक छयासठ सागर है ॥२४४॥ चारों क्षपकों का अतर सामान्य कथन के समान है। विशेष बात यह है कि अवधिज्ञानियों में क्षपकों का अतर वर्षपृथक्त्व है ॥२४५॥ मन. पर्ययज्ञानियों में प्रमत्त और अप्रमत्त सयतों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२४६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४७॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४८॥ चारों उपशमकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२४९॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥२५०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२५१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व कोटी है ॥२५२॥ चारों क्षपकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२५३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व है ॥२५४॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरतर है ॥२५५॥ केवलज्ञानी जीव में सयोगिकेवली का अन्तर सामा-

न्य कथन के समान है ॥२५६॥ अयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२५७॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयम मार्गणा से सामान्य संयतों में प्रमत्त से लेकर उपशान्त-कषाय तक के संयतों का अन्तर मन पर्यय ज्ञानियों के समान है ॥२५८॥ चारों क्षपक और अयोगिकेवली संयतों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२५९॥ सयोगिकेवली संयतों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२६०॥ सामायिक और छेदोपस्थापना में प्रमत्त तथा अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥२६१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२६२॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२६३॥ दोनों उपशमकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२६४॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥२६५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२६६॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व कोटी है ॥२६७॥ दोनों क्षपकों का नाना और एक जीव की अपेक्षा जघन्य और उत्कृष्ट अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२६८॥ परिहार शुद्धि में प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥२६९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२७०॥ उत्कृष्ट अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२७१॥ सूक्ष्म सांपरायिक में सूक्ष्म सांपरायिक उपशमकों का अंतर नाना जीवों की

अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥२७२॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष पृथक्त्व है ॥२७३॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२७४॥ क्षपकों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२७५॥ यथाख्यात संयतों में चारों गुणस्थानों का अंतर अकषायी जीवों के समान है ॥२७६॥ संयतासंयतों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२७७॥ असंयतों में मिथ्यादृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२७८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२७९॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तेतीस सागर है ॥२८०॥ सासादन सम्यग्मिथ्यादृष्टि और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२८१॥

इति संयममार्गणा

दर्शन मार्गणा से चक्षुदर्शनी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२८२॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२८३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्रमशः पल्य का असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥२८४॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो हजार सागर है ॥२८५॥ असंयत से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥२८६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥२८७॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो

हजार सागर है ॥२८८॥ चारों उपशमकों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान ॥२८९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर्मुहूर्त है ॥२९०॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम दो हजार सागर है ॥२९१॥ क्षपकों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२९२॥ अचक्षुर्दर्शनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का अंतर सामान्य कथन के समान है ॥२९३॥ अवधिदर्शनी जीवों का अंतर अवधिज्ञानियों के समान है ॥२९४॥ केवलदर्शनी जीवों का अंतर केवलज्ञानियों के समान है ॥२९५॥

इति दर्शनमार्गणा

लेश्या मार्गणा से कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥२९६॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२९७॥ उत्कृष्ट अन्तर क्रमश कुछ कम तेतीस, सत्तरह और सात सागर है ॥२९८॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२९९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर क्रमश पल्य का असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३००॥ उत्कृष्ट अंतर कुछ कम तेतीस, सत्तरह और सात सागर है ॥३०१॥ तेजोलेश्या और पद्मलेश्यावालों में मिथ्यादृष्टि

और असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२०२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२०३॥ उत्कृष्ट अतर कुछ अधिक दो सागर और अट्ठारह सागर है ॥२०४॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का अतर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२०५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर क्रमश. पल्य के असख्यातवें भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥२०६॥ उत्कृष्ट अतर क्रमश कुछ अधिक दो सागर और अट्ठारह सागर है ॥२०७॥ सयतासयत, प्रमत्त और अप्रमत्त जीवों का नाना और एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरन्तर है ॥२०८॥ शुक्ललेश्या वालों में मिथ्यादृष्टि और असयतसम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अतर नहीं है, निरतर है ॥२०९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर अन्तर्मुहूर्त है ॥२१०॥ उत्कृष्ट अतर कुछ कम इकतीस सागर है ॥२११॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥२१२॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अतर क्रमश पल्य का असख्यातवा भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥२१३॥ उत्कृष्ट अतर कुछ कम इकतीस सागर है ॥२१४॥ सयतासयत और प्रमत्त सयतों का नाना और एक जीव की अपेक्षा अतर नहीं है, निरन्तर है ॥२१५॥ अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरन्तर है ॥२१६॥ एक ... ग

जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१७॥ उत्कृष्ट अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३१८॥ अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण और सूक्ष्म साम्पराय गुणस्थानवर्ती तीनों उपशमक जीवों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥३१९॥ उत्कृष्ट अंतर वर्षपृथक्त्व है ॥३२०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३२१॥ उत्कृष्ट अंतर अन्तर्मुहूर्त है ॥३२२॥ उपशान्त कषाय वालों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥३२३॥ उत्कृष्ट अंतर वर्ष पृथक्त्व है ॥३२४॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥३२५॥ चारों क्षपकों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२६॥ सयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२७॥

इति लेश्यामार्गणा

भव्यमार्गणा से भव्यों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली तक प्रत्येक गुणस्थानवर्ती जीवों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३२८॥ अभव्य जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३२९॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३०॥

इति भव्यमार्गणा

सम्यक्त्वमार्गणा से सामान्य सम्यग्दृष्टियों में असंयत सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥३३१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर

अन्तर्मुहूर्त है ॥२३२॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्व कोटी है ॥२३३॥ संयतासंयत से लेकर उपशान्तकषाय गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानवर्तीयों का अन्तर अवधिज्ञानियों के समान है ॥२३४॥ चारों क्षपक और अयोगिकेवलियों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२३५॥ सयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२३६॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टियों में असंयत सम्यग्दृष्टियों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरन्तर है ॥२३७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२३८॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम पूर्वकोटी वर्ष है ॥२३९॥ संयतासंयत और प्रमत्तसंयत जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥२४०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक तेतीस सागर है ॥२४२॥ चारों उपशमकों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय अन्तर है ॥२४३॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व है ॥२४४॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥२४५॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक तेतीस सागर है ॥२४६॥ चारों क्षपक और अयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२४७॥ सयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२४८॥ वेदक सम्यग्दृष्टियों में असंयत सम्यग्दृष्टियों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥२४९॥ संयतासंयतों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं

है, निरन्तर है ॥३५०॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५१॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ कम छ्यासठ सागर है ॥३५२॥ प्रमत्त और अप्रमत्त का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥३५३॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५४॥ उत्कृष्ट अन्तर कुछ अधिक तेतीस सागर है ॥३५५॥ उपशमक सम्यग्दृष्टियों में असंयत सम्यग्दृष्टि जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥३५६॥ उत्कृष्ट अन्तर सात दिन रात है ॥३५७॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५८॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३५९॥ संयतासंयतों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥३६०॥ उत्कृष्ट अन्तर चौदह दिन रात है ॥३६१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६२॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६३॥ प्रमत्त और अप्रमत्त संयतों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य अन्तर एक समय है ॥३६४॥ उत्कृष्ट अन्तर पन्द्रह दिन रात है ॥३६५॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६६॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३६७॥ तीनों उपशमकों का अन्तर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है ॥३६८॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्ष पृथक्त्व है ॥३६९॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३७०॥ उत्कृष्ट अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३७१॥

उपशान्त कषाय जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य
अन्तर एक समय है ॥३७२॥ उत्कृष्ट अन्तर वर्षपृथक्त्व
है ॥३७३॥ एक जीव की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरं-
तर है ॥३७४॥ सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि जीवों
का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा जघन्य से एक समय है
॥३७५॥ उत्कृष्ट अंतर पल्य का असंख्यातवां भाग है
॥३७६॥ एक जीव की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है
॥३७७॥ मिथ्यादृष्टि जीवों का नाना और एक जीव
की अपेक्षा अंतर नहीं है, निरंतर है ॥३७८॥

इति सम्यक्त्वमार्गणा।

संज्ञी मार्गणा से सैनी जीवों में मिथ्यादृष्टियों का अंतर
सामान्य कथन के समान है ॥३७९॥ सासादन से लेकर
उपशान्तकषाय जीवों का अंतर पुरुषवेदियों के समान
है ॥३८०॥ चारों क्षपकों का अंतर सामान्य कथन के समान
है ॥३८१॥ असैनी जीवों का अंतर नाना जीवों की अपेक्षा
अंतर नहीं है, निरंतर है ॥३८२॥ एक जीव की अपेक्षा
अंतर नहीं है, निरंतर है ॥३८३॥

इति संज्ञीमार्गणा।

आहार मार्गणा से आहारक जीवों में मिथ्यादृष्टियों का
अंतर सामान्य कथन के समान है ॥३८४॥ सासादन
और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों का अन्तर नाना जीवों की
अपेक्षा सामान्य कथन के समान है ॥३८५॥ एक जीव

की अपेक्षा जघन्य अन्तर पल्य का असंख्यातवां भाग और अन्तर्मुहूर्त है ॥३८६॥ उत्कृष्ट अन्तर अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी काल है ॥३८७॥ असंयत से लेकर अप्रमत्त संयत गुणस्थान तक जीवों का नाना जीवों की अपेक्षा अन्तर नहीं है, निरंतर है ॥३८८॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अन्तर अन्तर्मुहूर्त है ॥३८९॥ उत्कृष्ट अन्तर अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात अवसर्पिणी और उत्सर्पिणी काल है ॥३९०॥ चारों उपशमकों का नाना जीवों की अपेक्षा अंतर सामान्य कथन के समान है ॥३९१॥ एक जीव की अपेक्षा जघन्य अंतर अंतर्मुहूर्त है ॥३९२॥ उत्कृष्ट अंतर अंगुल के असंख्यातवें भाग प्रमाण असंख्यातासंख्यात उत्सर्पिणी और अवसर्पिणी है ॥३९३॥ चारों क्षपकों का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३९४॥ सयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३९५॥ अनाहारक जीवों का अन्तर कार्मण काययोगियों के समान है ॥३९६॥ किन्तु विशेषता यह है कि अयोगिकेवली का अन्तर सामान्य कथन के समान है ॥३९७॥

इति आहारमार्गणा

इति अन्तराधिकार

## ❀ अथ भावाधिकार ❀

भाव कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य से मिथ्यादृष्टि औदारिक भाव है ॥२॥ सासादन पारिणामिक भाव है ॥३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षायोपशमिक भाव है ॥४॥ असंयतसम्यग्दृष्टि औपशमिक भाव भी है, क्षायिक भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥५॥ किन्तु असंयतत्व औदायिक भाव से है ॥६॥ संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत क्षायोपशमिक भाव है ॥७॥ अपूर्व करण आदि चारों गुणस्थानवर्ती उपशमक औपशमिक भाव है ॥८॥ चारों क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली क्षायिक भाव है ॥९॥

इति सामान्यकथन

गतिमार्गणा से नरकगति में सामान्य नारकियों में मिथ्यादृष्टि औदयिक भाव है ॥१०॥ सासादन पारिणामिक भाव है ॥११॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि क्षयोपशमिक भाव है ॥१२॥ असंयत सम्यग्दृष्टि औपशमिक भाव भी है, क्षायिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है॥१३॥ किन्तु असंयतत्व औदयिक भाव से है ॥१४॥ इस प्रकार प्रथम पृथ्वी में नारकियों के भाव होते हैं ॥१५॥ द्वितीय पृथ्वी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक नरकों में मिथ्यादृष्टि, सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टियों के भाव सामान्य कथन के समान है ॥१६॥ असंयतसम्यग्दृष्टि

औपशमिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥१७॥ किन्तु असयतत्व औदयिक भाव से है ॥१८॥ तिर्यंचगति में सामान्य तिर्यंच, पचन्द्रिय तिर्यंच, पचन्द्रिय तिर्यंचपर्याप्त और पचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर, सयता सयत गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥१६॥ विशेष बात यह है कि पचन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में असयत सम्यग्दृष्टि औपशमिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥२०॥ किन्तु असयतत्व औदयिक भाव से है ॥२१॥ मनुष्यगति में सामान्य मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥२२॥ देवगति में सामान्य देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयतसम्यग्दृष्टि तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥२३॥ भवनवासी व्यन्तर ज्योतिषी और सर्व देवियों में मिथ्यादृष्टि सासादन और सम्यग्मिथ्यादृष्टि के भाव सामान्य कथन के समान है ॥२४॥ असयत सम्यग्दृष्टि औपशमिक भाव भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥२५॥ किन्तु असयत औदयिक भाव से है ॥२६॥ सौधर्म ईशान कल्प से लेकर नवग्रैवेयक पर्यन्त विमानवासी देवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असयत गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥२७॥ अनुदिश आदि से लेकर सर्वार्थसिद्ध तक विमानवासी देवों में असयत सम्यग्दृष्टि औपशमिक भी है, क्षायिक भी है और क्षयोपशमिक भाव भी है ॥२८॥ किन्तु

असंयतत्व औदयिक भाव से है ॥२९॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रियमार्गणा से पंचेन्द्रियपर्याप्तकों में मिथ्यादृष्टि से लेकर, अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥३०॥ कायमार्गणा से सामान्य त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥३१॥

इति इन्द्रिय और कायमार्गणा

योगमार्गणा से सर्व मनोयोगी, सर्व वचनयोगी, सामान्य काययोगी और औदारिक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥३२॥ औदारिकमिश्र काययोगियों में मिथ्यादृष्टि और सासादन के भाव सामान्य कथन के समान हैं ॥३३॥ असंयतसम्यग्दृष्टि क्षायिक भाव भी है और क्षायोपशमिक भाव भी है ॥३४॥ किन्तु असंयतत्व औदयिक भाव से है ॥३५॥ सयोगिकेवली क्षायिक भाव है ॥३६॥ वैक्रियक काययोगियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥३७॥ वैक्रियकमिश्र काययोगियों में मिथ्यादृष्टि, सासादन और असंयत सम्यग्दृष्टि सामान्य कथन के समान हैं ॥३८॥ आहारक काययोगी और आहारकमिश्र काययोगियों में प्रमत्तसंयत क्षायोपशमिक भाव है ॥३९॥ कार्मण काययोगियों में मिथ्यादृष्टि, ...

सम्यग्दृष्टि और सयोगिकेवली भाव सामान्य कथन के समान है ॥४०॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्रीवेदी, पुरुषवेदी और नपुंसकवेदियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥४१॥ अपगतवेदियों में अनिवृत्तिकरण से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥४२॥

इति वेदमार्गणा

कषायमार्गणा से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायी जीवों में मिथ्यादृष्टि से लेकर सूक्ष्म सांपराय उपशमक और क्षपक गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥४३॥ अकषायी जीवों में उपशान्तकषाय आदि चारों गुणस्थानवर्ती भाव सामान्य कथन के समान हैं ॥४४॥

इति कषायमार्गणा

ज्ञानमार्गणा से मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभंगज्ञानी जीवों में मिथ्यादृष्टि और सासादन भाव सामान्य कथन के समान है ॥४५॥ मतिज्ञानी, श्रुतज्ञानी और अवधिज्ञानियों में असंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥४६॥ मनःपर्ययज्ञानियों में प्रमत्तसंयत से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥४७॥ केवलज्ञानियों में सयोगिकेवली भाव सामान्य कथन

के समान है ॥४८॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयममार्गणा से संयतों में प्रमत्त से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥४९॥ सामायिक और छेदोपस्थापना में प्रमत्त से लेकर अनिवृत्तिकरण गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥५०॥ परिहारशुद्धि में प्रमत्तसंयत और अप्रमत्त संयत भाव सामान्य कथन के समान है ॥५१॥ सूक्ष्मसाम्परायिक में सूक्ष्मसाम्परायिक उपशमिक और क्षपक भाव सामान्य कथन के समान है ॥५२॥ यथाख्यात में उपशान्त कषाय आदि चारों गुणस्थानवर्ती भाव सामान्य कथन के समान है ॥५३॥ संयतासंयत भाव सामान्य कथन के समान है ॥५४॥ असंयतों में मिथ्यादृष्टि से लेकर असंयत गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥५५॥

इति संयममार्गणा

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥५६॥ अवधिदर्शनी जीवों के भाव अवधिज्ञानियों के समान है ॥५७॥ केवल दर्शनी जीवों के भाव केवलज्ञानियों के समान है ॥५८॥

इति दर्शनमार्गणा

लेश्यामार्गणा से कृष्ण, नील और [illegible] वालों

म आदि के चार गुणस्थानवर्ती भाव सामान्य कथन के समान है ॥५६॥ तेजो और पद्मलेश्या वालों मे मिथ्या दृष्टि से लेकर अप्रमत्त गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६०॥ शुक्ललेश्या वालों में मिथ्या दृष्टि से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६१॥ भव्यमार्गणा से भव्य मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६२॥ अभव्य परिणामिक भाव है ॥६३॥

इति लेश्या और भव्य मार्गणा

सम्यक्त्व मार्गणा मे सामान्य सम्यग्दृष्टियों मे असंयत से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है ॥६४॥ क्षायिक सम्यग्दृष्टियों म असंयत सम्यग्दृष्टि क्षायिक भाव है ॥६५॥ क्षायिक सम्यक्त्व ही होता है ॥६६॥ किन्तु असंयतत्व औदयिक भाव से है ॥६७॥ संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत क्षयोपशमिक भाव है ॥६८॥ सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥६९॥ चारों उपशमक गुणस्थानों में औपशमिक भाव है ॥७०॥ सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥७१॥ चारों क्षपक, सयोगिकेवली और अयोगिकेवली गुणस्थानों में क्षायिक भाव है ॥७२॥ सम्यग्दर्शन क्षायिक ही होता है ॥७३॥ वेदकसम्यग्दृष्टियों मे असंयतसम्यग्दृष्टि क्षयोपशमिक भाव है ॥७४॥ सम्यग्दर्शन क्षयोपशमिक होता है ॥७५॥ किन्तु असंयतत्व

ौपाधिक भाव से है ॥७६॥ संयतासंयत, प्रमत्त और अप-
संयत क्षयोपशमिक भाव है ॥७७॥ सम्यग्दर्शन क्षयोपश-
मिक होता है। ॥७८॥ उपशम सम्यग्दृष्टियों में असंयत
म्यग्दृष्टि औपशमिक भाव है ॥७९॥ सम्यग्दर्शन औप-
शमिक होता है।॥८०॥ किन्तु असंयतत्व औदयिक भाव
है ॥८१॥ संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत
क्षयोपशमिक भाव है।॥८२॥ सम्यग्दर्शन औपशमिक होता
है ॥८३॥ अपूर्वकरण आदि चार गुणस्थानों में औपशमिक
भाव है ॥८४॥ सम्यग्दर्शन औपशमिक ही होता है ॥८५॥
सासादन सम्यग्दृष्टि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८६॥
सम्यग्मिथ्यादृष्टि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८७॥
मिथ्यादृष्टि भाव सामान्य कथन के समान है ॥८८॥

इति सम्यक्त्वमार्गणा

संज्ञीमार्गणा से संज्ञियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय
गुणस्थान तक भाव सामान्य कथन के समान है॥८९॥ असंज्ञी
औदयिक भाव है ॥९०॥ आहारमार्गणा से आहारकों में
मिथ्यादृष्टि से लेकर सयोगिकेवली गुणस्थान तक भाव, सामान्य
कथन के समान है॥९१॥ अनाहारक जीवों के भाव कार्मण-
काययोगियों के समान है॥९२॥ किन्तु विशेषता यह है कि
कार्मणकाययोगी अयोगिकेवली क्षायिक भाव है ॥९३॥

इति भावाधिकार

## अल्पबहुत्वाधिकार

अल्प-बहुत्व कथन सामान्य और विशेष की अपेक्षा से दो प्रकार है ॥१॥ सामान्य से अपूर्वकरणादि तीनों गुणस्थानों में उपशमक, प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और सबसे अल्प हैं ॥२॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३॥ उपशान्त कषाय से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥४॥ क्षीणकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥५॥ सयोगिकेवली और अयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण हैं ॥६॥ सयोगिकेवली काल की अपेक्षा असंख्यात गुणित हैं ॥७॥ सयोगिकेवलियों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्त संयत संख्यात गुणित हैं ॥८॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥९॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥१०॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥११॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥१२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥१३॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥१४॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥१५॥ उपशमकों से क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥१६॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥१७॥ संयतासंयत गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम ॥१८॥ क्षायिकों से उपशमक असंख्यात गुणित हैं ॥१९॥ उपशमकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥२०॥ प्रमत और

करना में उपशामक सब से कम हैं ॥२१॥ उपशामकों से
क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥२२॥ क्षायिकों से वेदक
संख्यात गुणित हैं ॥२३॥ इसी प्रकार उपशामक और
क्षपक गुणस्थानों में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्प बहुत्व है ॥२४॥
अपूर्वकरण आदि तीनों गुणस्थानों में उपशामक सबसे कम हैं
॥२५॥ उपशामकों से क्षायक संख्यात गुणित हैं ॥२६॥

इति सामान्यकथन

विशेष गति मार्गणा से नरकगति में सामान्य नारकियों में
सासादन सब से कम हैं ॥२७॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्या-
दृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥२८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टि से असंयत
सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२९॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों
से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥३०॥ असंयत गुण-
स्थान में उपशामक सब से कम हैं ॥३१॥ उपशामकों से
क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥३२॥ क्षायिकों से वेदक असं-
ख्यात गुणित हैं ॥३३॥ इसी प्रकार प्रथम पृथ्वी में अल्प-
बहुत्व है ॥३४॥ दूसरी से लेकर सातवीं पृथ्वी तक सासादन
सब से कम हैं ॥३५॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात
गुणित हैं ॥३६॥ सम्यग्दृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात
गुणित हैं ॥३७॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असं-
ख्यात गुणित हैं ॥३८॥ असंयत गुणस्थान में उपशामक सब
से कम हैं ॥३९॥ उपशामकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं
॥४०॥ तिर्यंच गति में सामान्य तिर्यंच, सामान्य

तिर्यंच, पंचेन्द्रिय पर्याप्त और पंचेन्द्रिय योनिमती तिर्यंचों में संयतासंयत सब से कम हैं ॥४१॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥४२॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥४३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥४४॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित और असंख्यात गुणित हैं ॥४५॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सब से कम हैं ॥४६॥ उपशमकों से क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥४७॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥४८॥ संयतासंयत गुणस्थान में उपशमक सब से कम हैं ॥४९॥ उपशमकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥५०॥ विशेषता यह है कि पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिमतियों में असंयत और संयतासंयत गुणस्थान में उपशमक उनसे भी कम हैं ॥५१॥ उपशमकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥५२॥ मनुष्य गति में सामान्य मनुष्य, मनुष्य-पर्याप्त और मनुष्यनियों में अपूर्वकरण आदि तीनों गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥५३॥ उपशान्त कषाय-प्रवेश से पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥५४॥ उपशान्त कषाय से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥५५॥ क्षीण कषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥५६॥ सयोगिकेवली और अयोगिकेवली भी प्रवेश से तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥५७॥ सयोगिकेवली संचय काल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥५८॥ सयोगिकेवली से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्त

संयत संख्यात गुणित हैं ॥५९॥ अप्रमत्त संयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥६०॥ प्रमत्त संयतों से संयतासंयत संख्यात गुणित हैं ॥६१॥ संयतासंयतों से सासादन संख्यात गुणित हैं ॥६२॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥६३॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥६४॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित और संख्यात गुणित हैं ॥६५॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥६६॥ उपशमकों से क्षायिक संख्यात गुणित हैं ॥६७॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥६८॥ संयतासंयत गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम हैं ॥६९॥ क्षायिकों से उपशमक संख्यात गुणित हैं ॥७०॥ उपशमकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥७१॥ प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥७२॥ उपशमकों से क्षायिक संख्यात गुणित हैं ॥७३॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥७४॥ विशेषता यह है कि मनुष्यनियों में असंयत, संयतासंयत, प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में क्षायिक उनसे भी कम हैं ॥७५॥ क्षायिकों से उपशमक संख्यात गुणित हैं ॥७६॥ उपशमकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥७७॥ इसी प्रकार, उपशमक और क्षपक गुणस्थानों में, सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व है ॥७८॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥७९॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥८०॥ देवगति [illegible]

न्य देवों में सासादन सबसे कम हैं ॥८१॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥८२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥८३॥ असंयतसम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥८४॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥८५॥ उपशमकों से क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥८६॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥८७॥ भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी देव और सब देवियों का अल्पबहुत्व सातवीं पृथ्वी के अल्पबहुत्व के समान है ॥८८॥ सौधर्म से लेकर सहस्रार तक कल्पवासी देवों में अल्पबहुत्व देवगति सामान्य के अल्पबहुत्व के समान है ॥८९॥ आनत से लेकर नवग्रैवेयक विमानों तक विमानवासी देवों में सासादन सबसे कम हैं ॥९०॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥९१॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥९२॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥९३॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥९४॥ उपशमकों से क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥९५॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥९६॥ नव अनुदिशों से अपराजित तक विमानवासी देवों में असंयत गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥९७॥ उपशमकों से क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥९८॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥९९॥ सर्वार्थ सिद्धि विमानवासी देवों में

असयत गुणस्थान में उपशमक सख्यात गुणित हैं ॥१००॥ उपशमकों से क्षायिक सख्यात गुणित हैं ॥१०१॥ क्षायिकों से वेदक सख्यात गुणित हैं ॥१०२॥

इति गतिमार्गणा

इन्द्रियमार्गणा से सामान्य पचेन्द्रिय और पचेन्द्रिय-पर्याप्तकों में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है। केवल विशेषता यह है कि असयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असख्यात गुणित हैं ॥१०३॥ कायमार्गणा में त्रसकायिक और त्रसकायिक पर्याप्तकों में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है। केवल विशेषता यह है कि असयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असख्यात गुणित हैं ॥१०४॥

इति इन्द्रिय और कायमार्गणा

योगमार्गणा से सर्व मनोयोगी, सर्व वचनयोगी, काययोगी और औदारिक काययोगियों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशामक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥१०५॥ उपशान्त कषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥१०६॥ उपशान्त कषायों से क्षपक सख्यात गुणित हैं ॥१०७॥ क्षीणकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥१०८॥ सयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥१०९॥ सयोगिकेवली सचयकाल की अपेक्षा सख्यात गुणित हैं ॥११०॥ सयोगिकेवली से अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसयत सख्यातगुणित हैं ॥१११॥ अप्रमत्तसयतों से प्रमत्तसयत सख्यात हैं ॥११२॥

प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥११३॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥११४॥ सासादन से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥११५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥११६॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं, और अनन्त गुणित हैं ॥११७॥ असंयत, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थान में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥११८॥ इसी प्रकार उपशमक और क्षपक गुणस्थानों में है ॥११९॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥१२०॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥१२१॥ औदारिकमिश्र काययोगियों में सयोगिकेवली सबसे कम हैं ॥१२२॥ सयोगिकेवली जिनों से असंयत सम्यग्दृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥१२३॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥१२४॥ सासादनों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥१२५॥ असंयत गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम हैं ॥१२६॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥१२७॥ वैक्रियक काययोगियों में अल्पबहुत्व देवगति के समान है ॥१२८॥ वैक्रियकमिश्र काययोगियों में सासादन सबसे कम हैं ॥१२९॥ सासादनों से असंयत सम्यग्दृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥१३०॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥१३१॥ अप्रमत्त गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥१३२॥ उपशमकों से

क्षायिक संख्यात गुणित है ॥१३३॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥१३४॥ आहारक काययोगी और आहारकमिश्र काययोगियों में प्रमत्तसंयत गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम है ॥१३५॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित है ॥१३६॥ कार्मणकाययोगियों में सयोगिकेवली जिन सबसे कम है ॥१३७॥ सयोगिकेवली जिनों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥१३८॥ सासादनों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥१३९॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्तगुणित हैं ॥१४०॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥१४१॥ उपशमकों से क्षायिक संख्यात गुणित हैं ॥१४२॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥१४३॥

इति योगमार्गणा

वेदमार्गणा से स्त्रीवेदियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानों के उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥१४४॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥१४५॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥१४६॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥१४७॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥१४८॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥१४९॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥१५०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि असं-

ख्यात गुणित हैं ॥१५१॥ असयत सम्यग्दृष्टियों स मिथ्यादृष्टि असख्यात गुणित है ॥१५२॥ असयत और सयतासयत गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम हैं ॥१५३॥ क्षायिकों स उपशमक असख्यात गुणित हैं ॥१५४॥ उपशमकों स वेदक असख्यात गुणित हैं ॥१५५॥ प्रमत्तसयत और अप्रमत्तसयत गुणस्थान म क्षायिक सबसे कम है ॥१५६॥ क्षायिकों से उपशमक सख्यात गुणित है ॥१५७॥ उपशमकों से वेदक सख्यात गुणित हैं ॥१५८॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥१५९॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥१६०॥ उपशमकों से क्षपक सख्यात गुणित हैं ॥१६१॥ पुरुषवेदियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानों म उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥१६२॥ उपशमकों से क्षपक सख्यात गुणित हैं ॥१६३॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसयत सख्यात गुणित हैं ॥१६४॥ अप्रमत्तों से प्रमत्तसयत सख्यात गुणित हैं ॥१६५॥ प्रमत्तसयतों स सयतासयत असख्यात गुणित हैं ॥१६६॥ सयतासयतों स सासादन असख्यात गुणित हैं ॥१६७॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि सख्यात गुणित हैं ॥१६८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों स असयत सम्यग्दृष्टि असख्यात गुणित हैं ॥१६९॥ असयत सम्यग्दृष्टियों स मिथ्यादृष्टि असख्यात गुणित हैं ॥१७०॥ असयत, सयतासयत, प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में अल्पबहुत्व सामा-

न्य कथन के समान हैं ॥१७१॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥१७२॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥१७३॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥१७४॥ नपुंसकवेदियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥१७५॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥१७६॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥१७७॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥१७८॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥१७९॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥१८०॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥१८१॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥१८२॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥१८३॥ असंयत और संयतासंयत गुणस्थान में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान हैं ॥१८४॥ प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम हैं ॥१८५॥ क्षायिकों से उपशमक संख्यात गुणित हैं ॥१८६॥ उपशमकों से वेदक संख्यातगुणित हैं ॥१८७॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥१८८॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥१८९॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥१९०॥ अपगत वेदियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों में

उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥१६१॥ उपशान्तकषायी पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥१६२॥ उपशान्त कषायियों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥१६३॥ क्षीणकषायी पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥१६४॥ सयोगिकेवली और अयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥१६५॥ सयोगिकेवली संचयकाल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥१६६॥

इति वेदमार्गणा

कषायमार्गणा से क्रोधकषायी, मानकषायी, मायाकषायी और लोभकषायियों में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानों में उपशमक जीव प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥१६७॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥१६८॥ केवल विशेषता यह है कि लोभकषायी क्षपकों से सूक्ष्म सांपरायिक उपशमक विशेष अधिक हैं ॥१६९॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२००॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२०१॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२०२॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥२०३॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥२०४॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥२०५॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२०६॥ असंयतसम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥२०७॥

असंयत, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत, और अप्रमत्तसंयत गुणस्थान में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥२०८॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण, अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥२०९॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥२१०॥ उपशमकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२११॥ अकषायी जीवों में उपशान्तकषाय सब से कम हैं ॥२१२॥ उपशान्तकषाय से क्षीणकषाय संख्यात गुणित हैं ॥२१३॥ सयोगिकेवली और अयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२१४॥ सयोगिकेवली संचय काल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥२१५॥ [illegible] ॥६६६॥ [illegible]

[illegible] ज्ञानमार्गणा से मत्यज्ञानी, श्रुताज्ञानी और विभङ्गज्ञानियों में सासादन सब से कम हैं ॥२१६॥ सासादनों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित और असंख्यात गुणित हैं ॥२१७॥ मति, श्रुत और अवधिज्ञानियों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥२१८॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥२१९॥ उपशान्तकषायियों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२२०॥ क्षपकों से क्षीणकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२२१॥ क्षीणकषायियों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२२२॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२२३॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥२२४॥ संयतासंयतों से असंयत सम्य-

दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२२॥५ इसादर, संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थान में अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥२२६॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में अल्प बहुत्व है ॥२२७॥ उपशामक सबसे कम हैं ॥२२८॥ उपशामकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२२६॥ मनःपर्ययज्ञानियों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशामक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥२३०॥ उपशान्त कषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२३१॥ उपशान्तकषायों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२३२॥ क्षीण-कषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२३३॥ क्षीणकषाय में अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२३४॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२३५॥ प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थान में उपशामक सबसे कम हैं ॥२३६॥ उपशामकों से क्षायिक संख्यात गुणित हैं ॥२३७॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥२३८॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन उपशामक गुणस्थानों में अल्प-बहुत्व है ॥२३९॥ उपशामक सबसे कम हैं ॥२४०॥ उप-शामकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२४१॥ केवल ज्ञानियों में सयोगिकेवली और अयोगिकेवली जिन प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२४२॥ सयोगिकेवली संचयकाल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥२४३॥

इति ज्ञानमार्गणा

संयममार्गणा से संयतों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥२४४॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२४५॥ उपशान्तकषायों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२४६॥ क्षीणकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२४७॥ सयोगिकेवली और अयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२४८॥ सयोगिकेवली संचयकाल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥२४९॥ सयोगिकेवली जिनों से अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२५०॥ अप्रमत्त संयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२५१॥ प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में उपशमक सबसे कम हैं ॥२५२॥ उपशमकों से क्षायिक संख्यात गुणित हैं ॥२५३॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥२५४॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥२५५॥ उपशामक सबसे कम हैं ॥२५६॥ उपशामकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२५७॥ सामायिक और छेदोपस्थापना में अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण गुणस्थानों में उपशामक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥२५८॥ उपशामकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२५९॥ क्षपकों से अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२६०॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२६१॥ प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में उपशामक सबसे कम हैं ॥२६२॥ उपशमकों

से क्षायिक संख्यात गुणित हैं ॥२६३॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥२६४॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण और अनिवृत्तिकरण, गुणस्थानों में अल्पबहुत्व है ॥२६५॥ उपशामक सबसे कम हैं ॥२६६॥ उपशामकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२६७॥ परिहार विशुद्धि में प्रमत्तसंयत सबसे कम हैं ॥२६८॥ प्रमत्त संयतों से अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२६९॥ प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम हैं ॥२७०॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥२७१॥ सूक्ष्म सांपरायिक में सूक्ष्म सांपरायिक उपशामक अल्प हैं ॥२७२॥ उपशामकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२७३॥ यथाख्यात में अल्प बहुत्व अकषायी जीवों के समान है ॥२७४॥ संयतासंयत में अल्पबहुत्व नहीं है ॥२७५॥ संयता संयत गुणस्थान में क्षायिक सबसे कम हैं ॥२७६॥ क्षायिकों से उपशामक असंख्यात गुणित हैं ॥२७७॥ उपशामकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥२७८॥ असंयतों में सासादन सबसे कम हैं ॥२७९॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥२८०॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२८१॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥२८२॥ असंयत गुणस्थान में उपशामक सबसे कम हैं ॥२८३॥ उपशामकों से क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥२८४॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥२८५॥

दर्शनमार्गणा से चक्षुदर्शनी और अचक्षुदर्शनियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥२८६॥ विशेषता यह है कि चक्षुदर्शनियों में असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२८७॥ अवधिदर्शनियों का अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियों के समान है ॥२८८॥ केवलदर्शनियों का अल्पबहुत्व केवलज्ञानियों के समान है ॥२८९॥

इति दर्शनमार्गणा।

लेश्यामार्गणा से कृष्णलेश्या, नीललेश्या और कापोतलेश्या वालों में सासादन सब से कम हैं ॥२९०॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥२९१॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२९२॥ असंयतसम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥२९३॥ असंयत गुणस्थान में क्षायिक सब से कम हैं ॥२९४॥ क्षायिकों से उपशमक असंख्यात गुणित हैं ॥२९५॥ उपशमकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥२९६॥ केवल विशेषता यह है कि कापोतलेश्यावालों के असंयत गुणस्थान में उपशमक सब से कम हैं ॥२९७॥ उपशमकों से क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥२९८॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥२९९॥ तेजोलेश्या और पद्मलेश्या वालों में अप्रमत्तसंयत सब से कम हैं ॥३००॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३०१॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं

॥२०२॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥२०३॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥२०४॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२०५॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२०६॥ असंयत, संयतासंयत, प्रमत्त-संयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थान में सम्यक्त्वसम्बन्धी अल्प-बहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥२०७॥ शुक्ललेश्या वालों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशामक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥२०८॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण हैं ॥२०९॥ उपशान्तकषाय से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥२१०॥ क्षीणकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२११॥ सयोगि-केवली प्रवेश की अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥२१२॥ सयोगिकेवली संचयकाल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥२१३॥ सयोगिकेवली जिनों से अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२१४॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥२१५॥ प्रमत्तसंयतों से संयता-संयत असंख्यात गुणित हैं ॥२१६॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥२१७॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥२१८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से मिथ्या-दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥२१९॥ मिथ्यादृष्टियों से असंयत-सम्यग्दृष्टि जीव संख्यात गुणित हैं ॥२२०॥ असंयत-गुण-स्थान में उपशामक सब से कम हैं ॥२२१॥ उपशामकों से

क्षायिक असंख्यात गुणित हैं ॥३२२॥ क्षायिकों से वेदक संख्यात गुणित हैं ॥३२३॥ संयतासंयत, प्रमत्तसंयत और अप्रमत्तसंयत गुणस्थान में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥३२४॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व है ॥३२५॥ उपशामक सबसे कम हैं ॥३२६॥ उपशामकों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥३२७॥

इति लेश्यामार्गणा

भव्यमार्गणा में भव्य मिथ्यादृष्टि से लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥३२८॥ अभव्यों में अल्पबहुत्व नहीं है ॥३२९॥ सम्यक्त्व-मार्गणा में सामान्य सम्यग्दृष्टियों में अल्पबहुत्व अवधिज्ञानियों के समान है ॥३३०॥ क्षायिकों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशामक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥३३१॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३३२॥ उपशान्तकषायियों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥३३३॥ क्षीण-कषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३३४॥ सयोगिकेवली और अयोगिकेवली प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३३५॥ सयोगिकेवली जिन संचयकाल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥३३६॥ अक्षपक और अनुपशामक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३३७॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३३८॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत संख्यात

गुणित है ॥३३९॥ संयतासंयतों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित है ॥३४०॥ असंयत, संयतासंयत, प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में क्षायिक का अल्पबहुत्व नहीं है ॥३४१॥ वेदक में अप्रमत्तसंयत सबसे कम हैं ॥३४२॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३४३॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥३४४॥ संयतासंयतों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥३४५॥ असंयत संयतासंयत, प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थान में वेदक का अल्पबहुत्व नहीं है ॥३४६॥ उपशमक में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प हैं ॥३४७॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३४८॥ उपशान्तकषाय से अनुपशमक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३४९॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३५०॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥३५१॥ संयतासंयतों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥३५२॥ असंयत, संयतासंयत, प्रमत्त और अप्रमत्त गुणस्थानों में उपशमक का अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५३॥ सासादन, सम्यग्मिथ्यादृष्टि और मिथ्यादृष्टि का अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५४॥

इति सम्यक्त्व मार्गणा ॥

संज्ञीमार्गणा से संज्ञियों में मिथ्यादृष्टि से लेकर क्षीणकषाय गुणस्थान तक अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है

॥३५५॥ विशेषता यह है कि संज्ञियों में असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥३५६॥ असंज्ञी जीवों में अल्पबहुत्व नहीं है ॥३५७॥ आहारमार्गणा- से आहारकों में अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में उपशमक प्रवेश की अपेक्षा तुल्य और अल्प है ॥३५८॥ उपशान्तकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही है ॥३५९॥ उपशान्तकषायों से क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥३६०॥ क्षीणकषाय पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३६१॥ सयोगिकेवली जिन प्रवेश की अपेक्षा पूर्वोक्त प्रमाण ही हैं ॥३६२॥ सयोगिकेवली जिन संचयकाल की अपेक्षा संख्यात गुणित हैं ॥३६३॥ सयोगिकेवली जिनों से अक्षपक और अनुपशमक अप्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३६४॥ अप्रमत्तसंयतों से प्रमत्तसंयत संख्यात गुणित हैं ॥३६५॥ प्रमत्तसंयतों से संयतासंयत असंख्यात गुणित हैं ॥३६६॥ संयतासंयतों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥३६७॥ सासादनों से सम्यग्मिथ्यादृष्टि संख्यात गुणित हैं ॥३६८॥ सम्यग्मिथ्यादृष्टियों से असंयत सम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥३६९॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥३७०॥ असंयत संयतासंयत, प्रमत्त अप्रमत्त गुणस्थान में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥३७१॥ इसी प्रकार अपूर्वकरण आदि तीन गुणस्थानों में सम्यक्त्व सम्बन्धी अल्पबहुत्व सामान्य कथन के समान है ॥३७२॥ उपशमक सबसे कम हैं ॥३७३॥ उपशमकों से

क्षपक संख्यात गुणित हैं ॥३७४॥ अनाहारकों में सयोगिकेवली जिन सब से कम हैं ॥३७५॥ सयोगिकेवलियों से अयोगिकेवली जिन संख्यात गुणित हैं ॥३७६॥ अयोगिकेवली जिनों से सासादन असंख्यात गुणित हैं ॥३७७॥ सासादनों से असंयतसम्यग्दृष्टि असंख्यात गुणित हैं ॥३७८॥ असंयत सम्यग्दृष्टियों से मिथ्यादृष्टि अनन्त गुणित हैं ॥३७९॥ असंयत गुणस्थान में उपशमक सब से कम हैं ॥३८०॥ उपशमकों से क्षायिक संख्यात गुणित हैं ॥३८१॥ क्षायिकों से वेदक असंख्यात गुणित हैं ॥३८२॥

इति संज्ञी और आहारमार्गणा

